22. नागालैंड	66.59	71.16	61.46
23. छत्तीसगढ़	64.66	77.38	51.85
24. मध्यप्रदेश	63.74	76.06	50.29
25. असम	63.25	71.28	54.61
26. उड़ीसा	63.08	75.35	50.51
27. मेघालय	62.56	65.43	59.61
28. आंध्रप्रदेश	60.47	70.32	50.43
29. राजस्थान	60.41	75.70	43.08
30. दादर नगर हवेली	57.63	71.18	40.23
31. उत्तर प्रदेश	56.27	68.82	42.22
32. जम्मू और काश्मीर	55.52	66.60	43.00
33. अरूणाचल प्रदेश	54.34	63.83	43.53
34. झारखंड	53.56	56.30	38.87
35. बिहार	47.00	59.68	33.12

संकेत * केंद्र शासित प्रदेश

स्रोत - India 2008, A Reference Annual PP. 12-13

सबसे कम साक्षरता बिहार में पाई जाती है। यहाँ कुल साक्षरता पुरूषों की साक्षरता एवं स्त्रियों की साक्षरता तीनों कम हैं। वास्तव में बिहार देश का एक मात्र ऐसा राज्य है, जहाँ की आधी से भी कम आबादी साक्षर है। यहाँ कुल साक्षरता दर 47.00% और पुरूषों एवं स्त्रियों की साक्षरता दर क्रमशः 59.68 तथा 33.12 प्रतिशत है। कम साक्षरता दर वाले अन्य राज्यों में झारखण्ड, अरूणाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तरप्रदेश एवं दादर नगर हवेली का स्थान आता है। इन सभी प्रदेशों की औसत साक्षरता दर 60% से कम है। अगर हम भारत के कुल औसत साक्षरता दर की बात करें तो यह 64.84% है।

भारत के सम्पूर्ण साक्षरता दर एवं विभिन्न राज्यों के बीच भारी असमानता को ध्यान में रखकर इसे तीन वर्गों में रखा जा सकता है-

(1) उच्च साक्षरता वाले प्रदेश (80% या अधिक)

(2) मध्यम साक्षरता वाले प्रदेश (60-80%), और

(3) निम्न साक्षरता वाले प्रदेश (60% से कम)

(1) उच्च साक्षरता वाले प्रदेश—इसके अन्तर्गत देश के 8 राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को रखा जा सकता है। इनमें प्रत्येक प्रदेशों की साक्षरता दर 80% से अधिक है। ये है-केरल, मिजोरम,

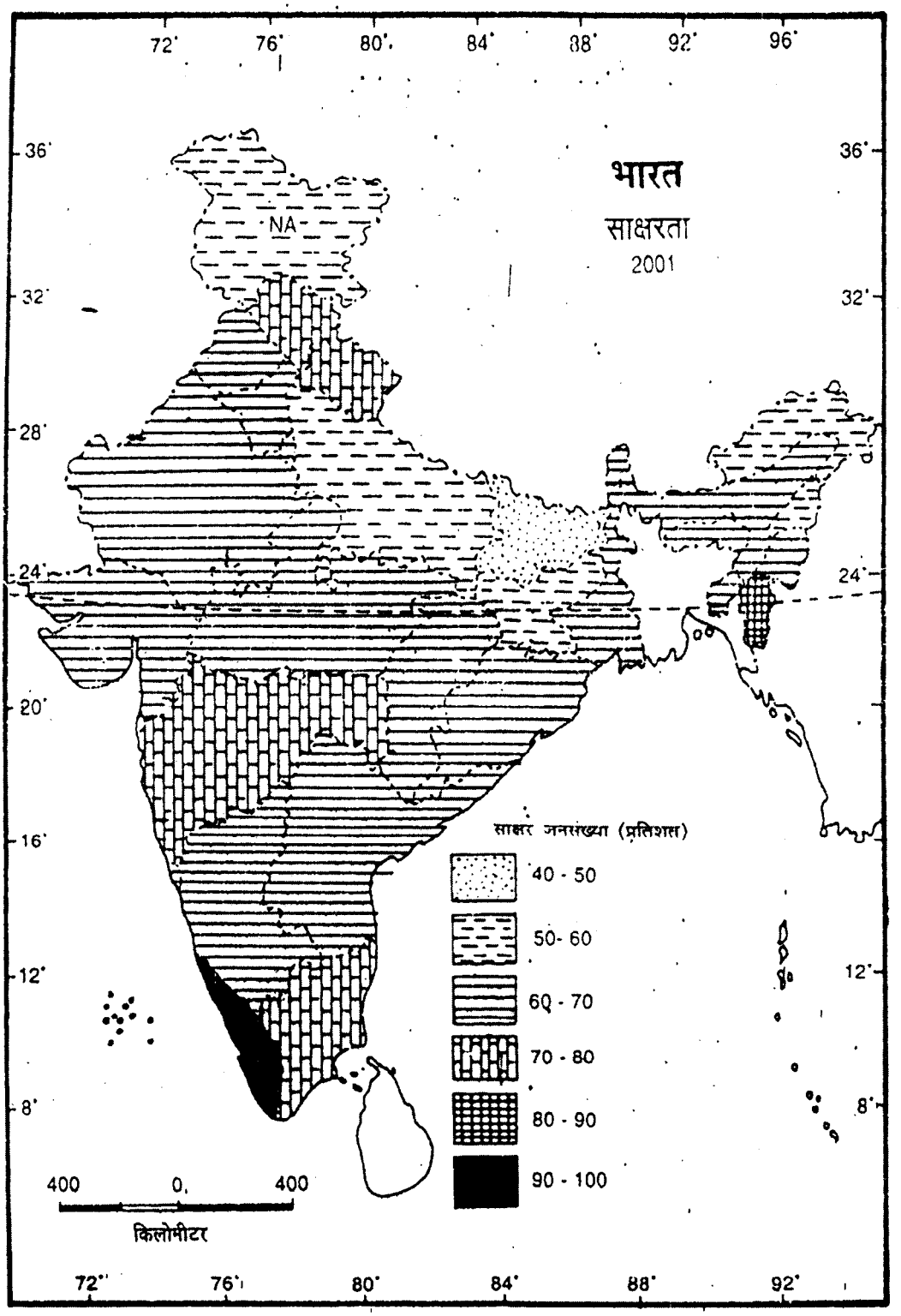

चित्र : भारत में साक्षरता प्रतिरूप (2001)

लक्षद्वीप, गोआ, दिल्ली, चंडीगढ़, पांडिचेरी और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह। इन प्रदेशों में अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह को छोड़कर शेष सभी राज्यों में नगरीकरण का दर भी 40% से अधिक है। उच्च-नगरीकरण का प्रभाव साक्षरता पर पड़ता है। क्योंकि, नगरीकरण एवं साक्षरता में सह-संबंध होता है।

(2) मध्य साक्षरता वाले प्रदेश—इस वर्ग के अंतर्गत देश के आधा से अधिक राज्य शामिल हैं। जहाँ साक्षरता दर 60% या इससे अधिक एवं 80% से कम है। ये हैं-महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु, उत्तराखण्ड, गुजरात, पंजाब, पश्चिम बंगाल, मणिपुर, हरियाणा, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, असम, मध्यप्रदेश, मेघालय, आंध्रप्रदेश और राजस्थान।

(3) निम्न साक्षरता वाले प्रदेश—इन प्रदेशों के अंतर्गत देश के वैसे राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को रखा जा सकता है। जहाँ साक्षरता पर औसत 60% से कम है। ये हैं-बिहार, झारखण्ड, अरूणाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तरप्रदेश, दादर एवं नगर हवेली। इन प्रदेशों में कृषि आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था निर्धनता आदि के कारण कम साक्षरता हैं।

3.6 निष्कर्ष (Summing-Up)

उपर्युक्त अवलोकन से स्पष्ट है कि जैसे-जैसे भारत की जनसंख्या बढ़ती गई वैसे-वैसे साक्षर एवं निरक्षर लोगों की संख्या भी बढ़ती गई है। वर्ष 1951 से पहले भारत में साक्षरता दर का औसत काफी नीचे था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से साक्षरता एवं शिक्षा के उत्थान के लिए विशेष प्रयास किए गए जिसका पर्याप्त लाभ देखने को मिला है और 2001 में भारत की कुल साक्षरता दर 64.84% हो गई है। लेकिन, जहाँ तक पुरूष एवं महिला की अलग-अलग साक्षरता दर का सवाल है तो इसमें काफी असमानता व्याप्त है। वर्ष 2001 के आँकड़े के अनुसार देश के कुल पुरूष आबादी का 75.26% जबकि कुल महिला आबादी केवल 53.67% ही साक्षर है। दूसरी ओर साक्षरता दर में ग्रामीण नगरीय भिन्नता भी देखने को मिलती है। एक ओर जहाँ नगरीय क्षेत्र में अधिक लोग साक्षर है वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता का अभाव हैं। औसत साक्षरता दर में राज्य स्तर पर भी भिन्नता पाई जाती है। जहाँ केरल, मिजोरम, लक्षद्वीप, गोवा, चंडीगढ़ आदि उच्च साक्षरता वाले प्रदेश है वही बिहार, झारखण्ड, अरूणाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तरप्रदेश आदि पिछड़े हुए हैं। हालाँकि, भारत में साक्षरता दर औसत 64.84% तो हो गया है। लेकिन, शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी आधी से कम आबादी ही शिक्षित है। अगर हम भारत के मानव विकास सूचकांक का अध्ययन करें तो पता चलता है कि अभी इस क्षेत्र में भारत जैसे देशों को मीलों लम्बा सफर तय करना है।

3.7 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(1) साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन करें।

(2) भारत में पुरूष एवं स्त्रियों के बीच साक्षरता दर में अंतर को स्पष्ट करें।

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(1) भारत में शिक्षा के अभिनव प्रवृति एवं प्रादेशिक प्रारूप को स्पष्ट करें।

(2) भारत में राज्यों के बीच कुल साक्षरता दर में असमानता है, स्पष्ट करें।

3.8 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) जनसंख्या भूगोल - आर० सी० चाँदना।

(2) जनसंख्या भूगोल- डॉ० रामदेव त्रिपाठी।

(3) Geography of Population - R.C. Chandana

(4) Geography of Population Geography - J.I. Clarke

(5) सामाजिक भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य।

❖❖❖

इकाई-4

भारतीय जनसंख्या की आयु एवं लिंगानुपात संरचना

पाठ - 4

(Age & Sex Structure of Indian Population)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

4.0 उद्देश्य (Objective)

4.1 परिचय (Introduction)

4.2 लिंग संयोजन (Sex Composition)

4.3 आयु संयोजन (Age Composition)

4.4 लिंगानुपात परिकलन की विधियाँ (Methods of Sex Ratio Estimation)

4.5 आयु संरचना विश्लेषण की विधियाँ (Methods of Age Structure Analysis)

4.6 भारत में लिंग संरचना (Sex Structure in India)

4.7 भारत में आयु संरचना (Age Structure in India)

4.8 भारत के आयु और लिंग पिरामिड (Indian Age-Sex Pyramid)

4.9 आयु और लिंगानुसार साक्षरता (Literacy By Age & Sex)

4.10 निष्कर्ष (Summing-up)

4.11 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

4.12 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

4.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ के अन्तर्गत छात्रों को निम्नलिखित तथ्यों को विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई है :-

- भारत में लिंग एवं आयु संयोजन
- लिंगानुपात एवं आयु संरचना के विश्लेषण की विधियाँ।
- भारतीय जनसंख्या में लिंगानुपात एवं आयु वर्ग के आंकड़े एवं विश्लेषण

- आयु वर्ग अंतराल के आधार पर जनसंख्या का वर्णन।
- लिंगानुपात में प्रादेशिक असमानता।
- विभिन्न आयु वर्ग एवं लिंग में साक्षरता का अंतर।

4.1 परिचय (Introduction)

किसी भी प्रदेश के जनसंख्या संयोजन के अध्ययन के लिए लिंगानुपात एवं आयु वर्ग की संरचना का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। जनसंख्या के इस घटक के आँकड़े प्राय: सभी जनगणनाओं के आँकड़ों से आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। किसी भी देश के जनसंख्या अध्ययन में उस देश की क्रियाशील जनसंख्या का आकार आयु वर्ग एवं स्त्री-पुरूष अनुपात का अध्ययन किए बिना मानव संसाधन का नियोजन संभव नहीं है। मानव संसाधन के अभाव से कोई क्षेत्र या देश सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से समृद्ध नहीं हो सकता। अत: भारत के आर्थिक विकास के लिए स्त्री-पुरूष अनुपात एवं आयु संरचना की सम्यक जानकारी आवश्यक हो जाती है। अत: भूगोलवेत्ताओं के अध्ययन के लिए यह क्षेत्र अति महत्वपूर्ण हो जाता है। विषय की महत्ता को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को भी इस पाठ का गंभीरता पूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

4.2 लिंग संयोजन (Sex Composition)

लिंग संयोजन का अर्थ किसी प्रदेश की कुल जनसंख्या में स्त्रियों एवं पुरूषों का अनुपात होता है। लिंगानुपात का प्रभाव प्रदेश की सामाजिक स्थिति तथा अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। अत: लिंगानुपात घटक का अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है। स्त्री और पुरूष एक-दूसरे के पूरक होते हैं। अत: किसी अर्थव्यवस्था के विकास में स्त्री-पुरूष अनुपात विशिष्ट स्थान रखता है। ट्रिवार्था के अनुसार ''किसी क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण के लिए स्त्री-पुरूष अनुपात मूलाधार है क्योंकि यह सदृश्य का एक महत्वपूर्ण लक्षण ही नहीं बल्कि अन्य जनांकिकीय तत्वों को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।''

लिंगानुपात अध्ययन के लिए स्त्रियों और पुरूषों की संख्या संबंधी आंकड़ों का संग्रहण जरूरी हो जाता है एवं इस आंकड़े का सबसे उचित स्रोत जनगणना से प्राप्त आँकड़ा होता है। क्योंकि इसमें लिंग छिपाने की संभावना कम होती है जबकि आयु, व्यवसाय आदि में अधिक।

4.3 आयु संयोजन (Age Composition)

आयु संयोजन किसी जनसंख्या के आयु वर्गों के अनुसार वितरण को प्रस्तुत करता है। इसे आयु संरचना (Age Structure) भी कहते हैं। जनसंख्या संरचना मुख्यत: जनसंख्या परिवर्तन की दर और दिशा को निर्धारित करती है। किसी भी देश में कार्यशील जनसंख्या का अधिकांश 15-59 वर्ष आयु वर्ग का होता है। शेष आयु वर्ग आश्रित जनसंख्या वर्ग के अन्तर्गत आती है। अर्थात जिस जनसंख्या में बच्चों और वृद्धों

की संख्या अधिक होती है वहाँ निर्भरता अधिक पाई जाती है और उस प्रदेश की आर्थिक विकास की गति मंद होती है। इसके विपरीत कार्यशील जनसंख्या का अनुपात अधिक होने पर आर्थिक विकास तीव्रता से होती है। इसके साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सामाजिक-आर्थिक दशाओं पर भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आयु संरचना का प्रभाव पड़ता है।

प्रसन्नता, मर्त्यता और प्रवास आयु संयोजन को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं जो आपस में अन्तर्संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य सामाजिक-आर्थिक दशाएँ जैसे प्राकृतिक आपदाएं, युद्ध महामारियाँ, जनसंख्या नीतियों का भी आयु संरचना पर प्रभाव पड़ता है।

4.4 लिंगानुपात परिकलन की विधियाँ (Methods of Sex-Ratio Estimation)

किसी भी जनसंख्या में स्त्रियों और पुरुषों के अनुपात को कई प्रकार से प्रकट किया जाता है। विश्व के अलग-अलग देशों में लिंगानुपात प्रकट करने के तरीकों में पर्याप्त अन्तर देखने को मिलता है। भारत में यह अनुपात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में दर्शाया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित सूत्र का सहारा लिया जाता है।

सूत्र

प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की कुल संख्या

$$= \frac{\text{कुल स्त्रियों की जनसंख्या}}{\text{कुल पुरुष की जनंसख्या}} \times 100$$

यहाँ, 1000 का लिंगानुपात यह बताता है कि दोनों लिंगों की संख्या बराबर है। 1000 से अधिक लिंगानुपात का अर्थ यह है कि स्त्रियों की संख्या पुरूषों की संख्या से कम है।

इसी प्रकार कुल जनसंख्या में पुरूषों का प्रतिशत ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र है।

सूत्र,

$$\text{कूल जनसंख्या में पुरूष का प्रतिशत} = \frac{\text{कुल पुरूष जनसंख्या}}{\text{कुल जनंसख्या}} \times 100$$

और कुल जनसंख्या में स्त्रियों का प्रतिशत ज्ञात करने हेतु

सूत्र, कुल जनसंख्या में स्त्रियों का प्रतिशत

$$= \frac{\text{कुल स्त्रियों की जनसंख्या}}{\text{कुल जनंसख्या}} \times 100$$

का सहारा लिया जाता है।

4.5 आयु संरचना विश्लेषण की विधियाँ (Methods of Age Structure Analysis)

जनसंख्या भूगोल में आयु संरचना के विश्लेषण के लिए जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है। उसमें आयु वर्ग, आयु पिरामिड, आयु सूचकांक और माध्यिका आयु प्रमुख है। इन सब को आधार मानकर भारतीय जनगणना विभाग ने भारत की समस्त जनसंख्या को तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया है। ये वर्ग हैं:-

किशोर (15 वर्ष से कम आयु)

प्रौढ़ (15-59 वर्ष आयु)

वृद्ध (60 वर्ष तथा इससे अधिक आयु)

प्रौढ़ वर्ग की जनसंख्या को श्रमजीवी अथवा कार्यरत आयु वर्ग कहा जाता है। ट्रिवार्था के अनुसार "वयस्क आयु वर्ग जैविक दृष्टिकोण से सर्वाधिक प्रजननीय आर्थिक रूप से सर्वाधिक होता है।" बाल एवं वृद्ध लोग वास्तव में प्रौढ़ पर ही आश्रित होते हैं। क्योंकि प्रौढ़ आयु वर्ग के स्त्री-पुरूष विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में संलग्न होकर धनोपार्जन करते हैं। अत: जिस प्रदेश में प्रौढ़ की संख्या अधिक होती है, आर्थिक विकास दर भी तीव्र होता है।

उल्लेखनीय है कि आवश्यकता, उद्धेश्य तथा स्थानीय परिस्थिति के अनुसार आयु वर्ग बनाये जा सकते हैं जिसके लिए प्राय: आयु वर्ग के अंतराल। आयु वर्ग इस प्रकार है। 0 – 4, 5 – 9, 10 –14, 15 – 19, 20-24, 25-29, 30-39, 40-49, 50-59, 60-69 एवं 75 से अधिक ।

4.6 भारत में लिंग संरचना (Sex Structure in India)

भारत में लिंगानुपात पुरुषों के पक्ष में है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या (102.7 करोड़) में से 53.1 करोड़ पुरूष हैं एवं 49.6 करोड़ स्त्रियाँ हैं। इस प्रकार वर्ष 2001 के अनुसार भारत में लिंगानुपात प्रति हजार पुरूष पर 933 महिलाओं का है। जो इस बात का सूचक है कि भारत में पुरूषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या कम है।

तालिका-भारत में लिंगानुपात : 1901-2001

(प्रति 1000 पुरूष पर स्त्रियों की संख्या)

	(प्रति 1000 पुरूष पर स्त्रियाँ)		
वर्ष	**कुल**	**ग्रामीण**	**नगरीय**
1901	972	979	910
1911	964	975	872
1921	955	970	846

1931	950	966	838
1941	945	965	831
1951	946	965	860
1961	941	963	845
1971	930	949	858
1981	934	951	879
1991	927	938	894
2001	933	946	901

स्रोत - India 2008, A Reference Annual P.11

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 1901 के बाद भारत में लिंगानुपात सामान्यत: लगातार घटता जा रहा है।

सन् 1901 में स्त्रियों की औसत 1000 पुरूषों के पीछे 972 था, जो घटकर 1931 में 950, 1961 में 941 तथा 1971 में 930 रह गया इस प्रकार 1901 से 1971 के बीच की 70 वर्षों की अवधि में 1000 पुरूषों के पीछे स्त्रियों की संख्या में 42 की कमी हो गई। 1981 में पुरुष-स्त्री अनुपात 1971 की अपेक्षा थोड़ा बढ़कर 934 हो गया। 20वीं शताब्दी का सबसे कम लिंगानुपात 1991 में 927 था। सन् 2001 में यह थोड़ा सा बढ़कर 933 हो गया।

भारतीय जनसंख्या के लिंगानुपात संरचना के अध्ययन से अनेक प्रकार की असमानताओं का पता चलता है। इसमें प्रमुख निम्नलिखित हैं।

(i) ग्रामीण-नगरीय लिंगानुपात में असमानता :

भारत के लिंगानुपात कम होने की प्रवृति 1901 से लेकर आज तक लगातार बनी हुई है। वास्तव में विश्व के लगभग सभी विकासशील देश में यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है। हमारे यहाँ ग्रामीण नगरीय लिंगानुपात गाँव से नगरों की ओर पुरुष प्रवास प्रधान है। ग्रामीण इलाकों से बहुत से पुरुष आजीविका की तलाश में नगरीय क्षेत्रों में प्रवास कर जाते हैं। वे अपने परिवारों को ग्रामीण घरों में ही छोड़ जाते हैं, जिससे लिंग अनुपात संतुलन बिगड़ जाता है। परन्तु कुछ राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में इसका अपवाद भी मिलता है। इनके नगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा लिंगानुपात अधिक है। मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम, पाण्डिचेरी, दमण और दीव दिल्ली और चंडीगढ़ इसके सुन्दर उदाहरण हैं।

(ii) सामाजिक संरचना के अनुसार लिंगानुपात में असमानता:

भारत हिन्दू जनसंख्या की बहुलता वाला राष्ट्र है। लेकिन, यहाँ कई धार्मिक समुदाय के लोग निवास

करते हैं। एक ओर जहाँ हिन्दुओं का लिंगानुपात देश के औसत के लगभग बराबर रहता है वही मुसलमानों में लिंगानुपात हिन्दुओं की तुलना में कम पाया जाता है। देश में ईसाइयों का लिंगानुपात उच्चतम एवं सिक्ख समुदाय का लिंगानुपात निम्नतम है। उल्लेखनीय है कि धार्मिक संरचना के अनुसार लिंगानुपात का सही आंकड़ा उपलब्ध नहीं होने के कारण इसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है।

भारतीय जनगणना विभाग के पास अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिंगानुपात आंकड़े उपलब्ध है जो इस प्रकार हैं-

अनुसूचित जाति/जनजाति में लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुष पर स्त्रियाँ)

सामाजिक वर्ग	वर्ष 1981	वर्ष 1991
अनुसूचित जाति	982	922
अनुसूचित जनजाति	983	972
अन्य	930	923
कुल जनसंख्या	935	927

स्रोत - Census of India, 1991

तालिका से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति का लिंगानुपात सामान्य लिंगानुपात से थोड़ा कम हे। जिसका जमुख कारण अनुसूचित जातियों में स्त्रियों की मृत्यु दर का उच्च होना है। इसके विपरीत अनुसूचित जनजातियों में लिंगानुपात उच्च है इसका कारण कई जनजातियाँ इसाई धर्म से संबंधित है जिसमें स्त्रियों की मृत्यु दर निम्न है।

(iii) समयानुसार लिंगानुपात में असमानता

भारत में लिंगानुपात - 2001 (1000 पुरुष के अनुपात में स्त्रियों की संख्या)

2001 में कोटि क्रम	राज्य/केन्द्र शासित क्षेत्र	कुल जनसंख्या में स्त्री-पुरुष अनुपात 2001	1999	1991 में कोटि क्रम
1.	केरल	933	927	1
2.	पाण्डिचेरी	1058	1036	3
3.	छत्तीसगढ़	1001	979	2
4.	तमिलनाडु	987	974	5
5.	मणिपुर	978	958	11
6.	आंध्रप्रदेश	978	972	6

7.	मेघालय	972	955	12
8.	उड़ीसा	972	971	7
9.	हिमाचल प्रदेश	968	976	4
10.	कर्नाटक	965	960	10
11.	उत्तराखण्ड	962	937	16
12.	गोवा	961	967	9
13.	त्रिपुरा	948	945	14
14.	लक्षद्वीप	948	943	15
15.	झारखण्ड	948	922	20
16.	मिजोरम	935	923	19
17.	असम	935	923	19
18.	पश्चिम बंगाल	934	917	22
19.	महाराष्ट्र	922	934	17
20.	राजस्थान	921	910	24
21.	गुजरात	920	934	17
22.	बिहार	919	907	25
23.	मध्यप्रदेश	919	912	23
24.	नागालैंड	900	886	26
25.	उत्तर प्रदेश	898	876	29
26.	अरूणाचल प्रदेश	893	859	31
27.	जम्मू और कश्मीर	892	–	–
28.	पंजाब	876	882	27
29.	सिक्किम	875	878	28
30.	हरियाणा	861	865	30
31.	अंडमान और निकोबार द्वीप समह*	846	818	33
32.	दिल्ली*	821	827	32
33.	दादर और नगर हवेली*	812	952	13
34.	चण्डीगढ़*	777	790	34
35.	दमन और द्वीप*	710	969	8

* केन्द्र प्रशासित प्रदेश

स्रोत - भारत की जनगणना, प्राथमिक जनगणनानुसार, कुल जनसंख्या सारणी

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में लिंगानुपात 938 है, जो एक औसत स्थिति प्रस्तुत करता है। लेकिन, राज्य स्तर पर लिंगनुपात में विषमता पाई जाती है। देश में मात्र केरल एक ऐसा राज्य है, जहाँ लिंगानुपात स्त्रियों के पक्ष में है। यहाँ 1000 पुरुष पर 1058 स्त्रियाँ है। केन्द्र शासित प्रदेश पांडिचेरी में भी लिंगानुपात 1001 है जो थोड़ा सा स्त्रियों के पक्ष में है शेष 33 राज्यों में लिंगानुपात पुरुषों के पक्ष में जाता है। 2001 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार 18 राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में

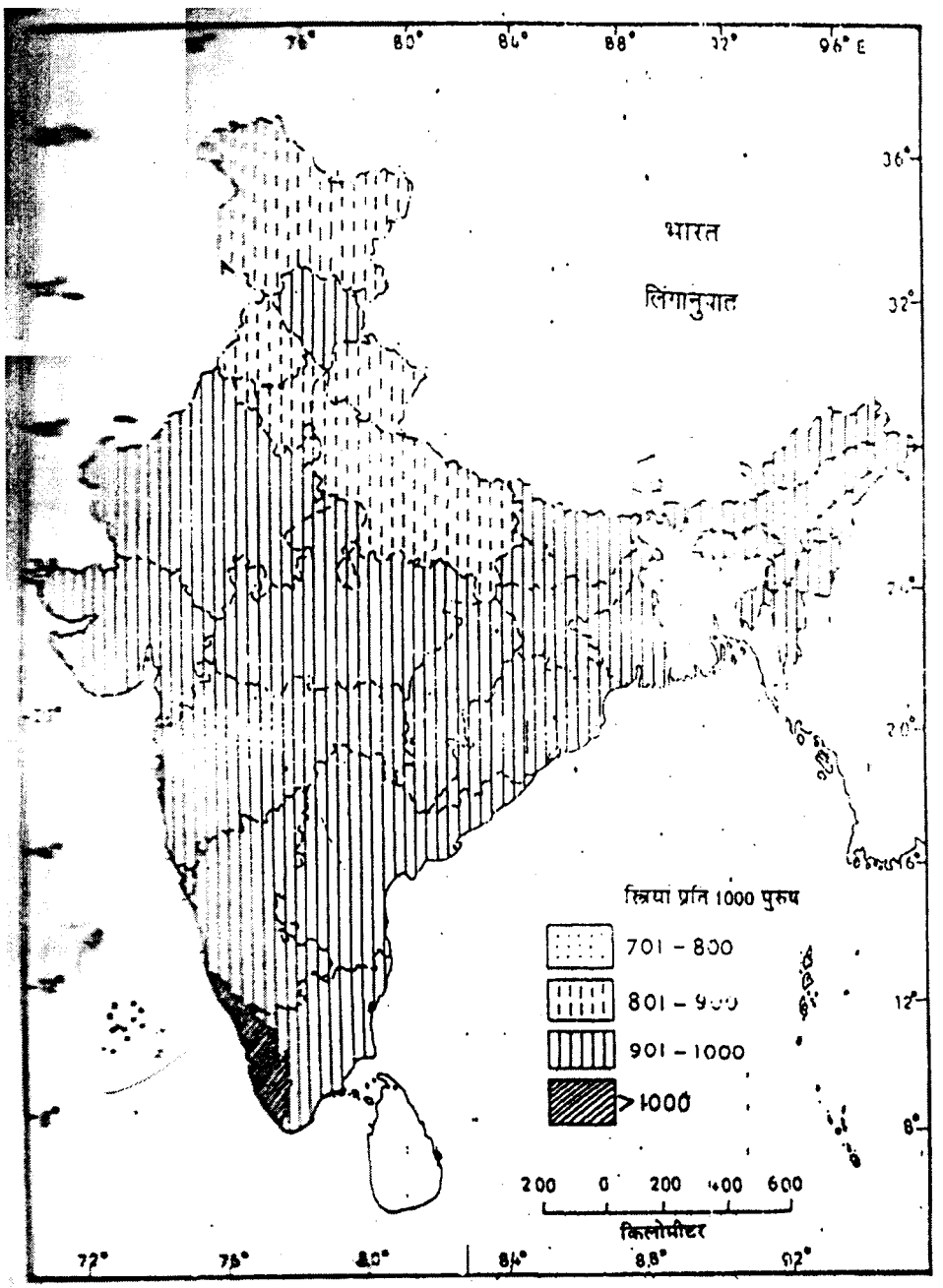

चित्र : भारत में लिंगानुपात प्रतिरूप (2001)

लिंगानुपात भारत के औसत लिंगानुपात 933 से अधिक था। केरल तथा पांडिचेरी के अलावा इस वर्ग में छत्तीसगढ़ (989), तमिलनाडु (987), मणिपुर (978), आंध्रप्रदेश (978), मेघालय (972), उड़ीसा (972), हिमाचल प्रदेश (978), कर्नाटक (965), उत्तराखण्ड (962), गोवा (961), त्रिपुरा (948), लक्षद्वीप (948), झारखण्ड (941), मिजोरम (935) तथा पश्चिम बंगाल (934) सम्मिलित हैं। शेष 17 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में लिंगानुपात भारतीय औसत से कम है। भारतीय संदर्भ में 950 अथवा सबसे अधिक लिंगानुपात महिलाओं के पक्ष में माना जाता है। देश के 12 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में लिंगानुपात 861 से 932 के बीच है। केन्द्र शासित प्रदेशों अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली, दादर और नगर हवेली, चंडीगढ़ और दमन और दीव में आते न्यून लिंगानुपात पाया जाता है। सबसे कम लिंगानुपात 710 दमन और द्वीप में है।

लिंगानुपात कम होने के कारण — भारत में लिंगानुपात कम होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:-

(i) लड़कियों की तुलना में लड़के अधिक संख्या में जन्म लेते हैं।

(ii) बचपन से ही लड़कों को प्राथमिकता दी जाती है जबकि लड़कियों की उपेक्षा की जाती है।

(iii) भारत के कई भागों, धर्मों, जातियों आदि में बाल विवाह प्रथा प्रचलित है। इस कारण लड़कियों को छोटी उम्र में ही मातृत्व का भार उठाना पड़ता है और प्राय: प्रसूतिकाल में उनकी मृत्यु हो जाती है।

(iv) आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से बहुत से दम्पति शिशु के जन्म के पहले ही उसके लिंग का पता लगा लेते हैं और पुत्रोत्पति की लालसा के कारण स्त्री-शिशु होने पर भ्रूण हत्या करवा देते हैं।

(v) दहेज संबंधी स्त्री हत्याओं में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है।

4.7 भारत में आयु संरचना (Sex Structural in India)

आयु संरचना किसी भी देश की जनांकिकीय संक्रमण की अवस्था को प्रकट करने वाला घटक है। भारत वर्तमान में जनांकिकीय संक्रमण की विस्फोटक अवस्था से गुजर रहा है जहाँ मृत्यु दर एवं जन्म दर में अधिक अंतर होने से प्राकृतिक वृद्धि तीव्र है। भारत जैसे देश में किशोर वर्ग की अधिकता है एवं 65 वर्ष से अधिक आयु वर्ग का आकार छोटा है-

भारत की जनसंख्या का आयुवर्गों में प्रतिशत वितरण (1999)

आयु वर्ग	कुल	पुरुष	स्त्री
0-4	11.6	11.6 1	1.5
5-9	11.2	11.3	11.1

10-14	12.0	12.0	11.8
15-19	10.3	10.6	9.9
20-24	9.2	9.1	9.3
35-39	6.3	6.3	6.4
40-44	5.7	5.7	5.7
45-49	4.4	4.5	4.3
50-54	3.8	3.8	3.8
55-59	2	2.9	2.9
60-64	2.5	2.4	2.7
65-69	3.0	2.9	2.1
70-74	1.3	1.2	1.4
75-79	0.7	0.7	0.8
80-84	0.3	0.3	0.4
85	+ 0.2	0.2	0.2
योग	100.00	100.0	100.0

स्रोत Sample Registration Systems Statistical Report 1999, Registrar General India.

उपर्युक्त तालिका को ध्यान में रखकर भारत के जनसंख्या की आयु संरचना के अध्ययन को आसान बनाने हेतु इसे चार प्रधान वर्गों में बाँटा जा सकता है-

(1) बाल आयु वर्ग (0-14)—भारत के कुल जनसंख्या का 34.8% इस आयु वर्ग के अन्तर्गत है। बाल आयु वर्ग आश्रित जनसंख्या के अन्तर्गत आता है। जिसके भरण-पोषण आदिका उत्तरदायित्व सक्रिय जनसंख्या पर होता है। प्राय: उच्च जन्म दर के कारण बाल आयु वर्ग की संख्या बढ़ती है जो समाज के पिछड़ेपन होने का प्रमाण है। लेकिन भारत जैसे देश में धीरे-धीरे इसके प्रतिशत में कमी होती दिखाई दे रही है। 1961में जहाँ 41.1% इस वर्ग के अन्तर्गत आते थे, वही यह 1999 में घटकर 34.8% रह गया है। यह प्रवृत्ति जनांकिकीय संक्रमण प्रवृत्ति का सुन्दर संकेत है।

(2) युवा वर्ग (15-39)—भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 41.4% भाग युवा वर्ग के अंतर्गत आता है। यह सक्रिय जनसंख्या मुख्य अंग है। इस वर्ग के अन्तर्गत 41.5% महिलाएँ एवं 41.3% पुरूष वर्ग है। वर्ष 1961 में यह प्रतिशत 36.6% था, जो 1981 में 38.1 एवं 1999 में 41.4% हो गया। यह आनुपातिक वृद्धि जनांकिकीय परिवर्तन का अच्छा परिणाम है। जो देश के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है।

भारतीय जनसंख्या के आयु वितरण (प्रतिशत) में परिवर्तन (1961-99)

आयु वर्ग	1961	1971	1981	1991	1999
0-14	41.4	42.0	39.6	37.3	34.8
15-39	37.8	36.6	38.1	39.8	41.4
40-59	15.4	15.4	15.8	15.7	16.8
60 +	5.7	6.0	6.5	6.8	7.0

Source - **(i)** Census of India 1999 and

(ii) Sample Registration System statistical Report 1999, Registrar general, India

(3) प्रौढ़ आयु वर्ग (40-59)— 40 से 59 वर्ष की जनंसख्या को प्रौढ़ आयु वर्ग के अन्तर्गत रखा जा सकता है। इस आयु वर्ग में भारत की 16.8% जनसंख्या आती है। जनसंख्या की आयु संरचना का यह वर्ग सक्रिय जनसंख्या का प्रमुख घटक है और भारत के कल कार्यशील जनसंख्या का लगभग 30% भाग इसके अन्तर्गत आता है। 1961 से 1999 तक इस आयु वर्ग की जनसंख्या में मात्र 1% के आसपास ही बढ़ोत्तरी हो सकी है।

(4) वृद्ध आयु वर्ग (60 +)—भारत जैसे विकासशील देशों में जीवन प्रतिज्ञा का होने के कारण 60+ की आयु को वृद्ध आयु वर्ग माना जाता है। वर्ष 1999 के अनुसार देश के कुल जनसंख्या का 7.0% भाग इस वर्ग में आता है जबकि 1.2% जनसंख्या ही 75+ आयु वर्ग में है। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 1961 से लगातार 65+ आयु वर्ग में है। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 1961 से लगातार 65+ आयु वर्ग में मंद गति से वृद्धि हो रही है। वृद्ध आयु वर्ग में जनसंख्या वृद्धि जनांकिकी संक्रमण की उच्च अवस्था की ओर प्रगति और जीवन प्रत्याज्ञा में सुधार का सूचक है।

4.8 भारत के आयु-लिंग पिरामिड (Indian Age-Sex Pyramid)

भारत की 1991 की जनसंख्या के आधार पर बने आयु और लिंग को प्रदर्शित करने वाले पिरामिड का आधार बहुत चौड़ा है। यह चौड़ा आधार प्रारंभिक आयु वर्गों तक बना रहता है। लेकिन, इसके बाद क्रमशः ऊपर की ओर संकरा होता जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री तथा पुरूष दोनों की जनसंख्या का अधिकतम अनुपात 5-9 वर्ष के आयु के वर्ग में है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जन्म दर तथा शिशु मृत्यु दर अब भी काफी अधिक है। आयु में वृद्धि के साथ जनसंख्या के अनुपात में कमी होती जाती है जो उच्च आयु वर्ग में कम जनसंख्या की ओर संकेत है।

भारत में जन्म दर तथा मृत्यु दर में कमी होने से जनसंख्या संघटन में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। 1971 की तुलना में 1991 में देश की बाल आयु का अनुपात घटा है। 1971 में देश में बाल आयु

वर्ग का प्रतिशत जहाँ 42.0% के आसपास था जो 1991 में घटकर 37.0 के आसपास हो गया। इसके विपरीत प्रौढ़ों का अनुपात 1971 में 15.4% से बढ़कर 1991 में 15.8% हो गया हालाँकि यह वृद्धि भी नगण्य ही है। जबकि वृद्ध आयु वर्ग का अनुपात 6.0% से बढ़कर 6.8% हो गया है। नगरों की तुलना में गाँव में बाल आयु वर्ग एवं वृद्ध आयु वर्ग का अनुपात अधिक है। परिणामस्वरूप नगरों की तुलना में गाँवों में आश्रित जनसंख्या का अनुपात भी अधिक है। इस स्थिति के लिए निम्नलिखित तीन कारक उत्तरदायी हैं–

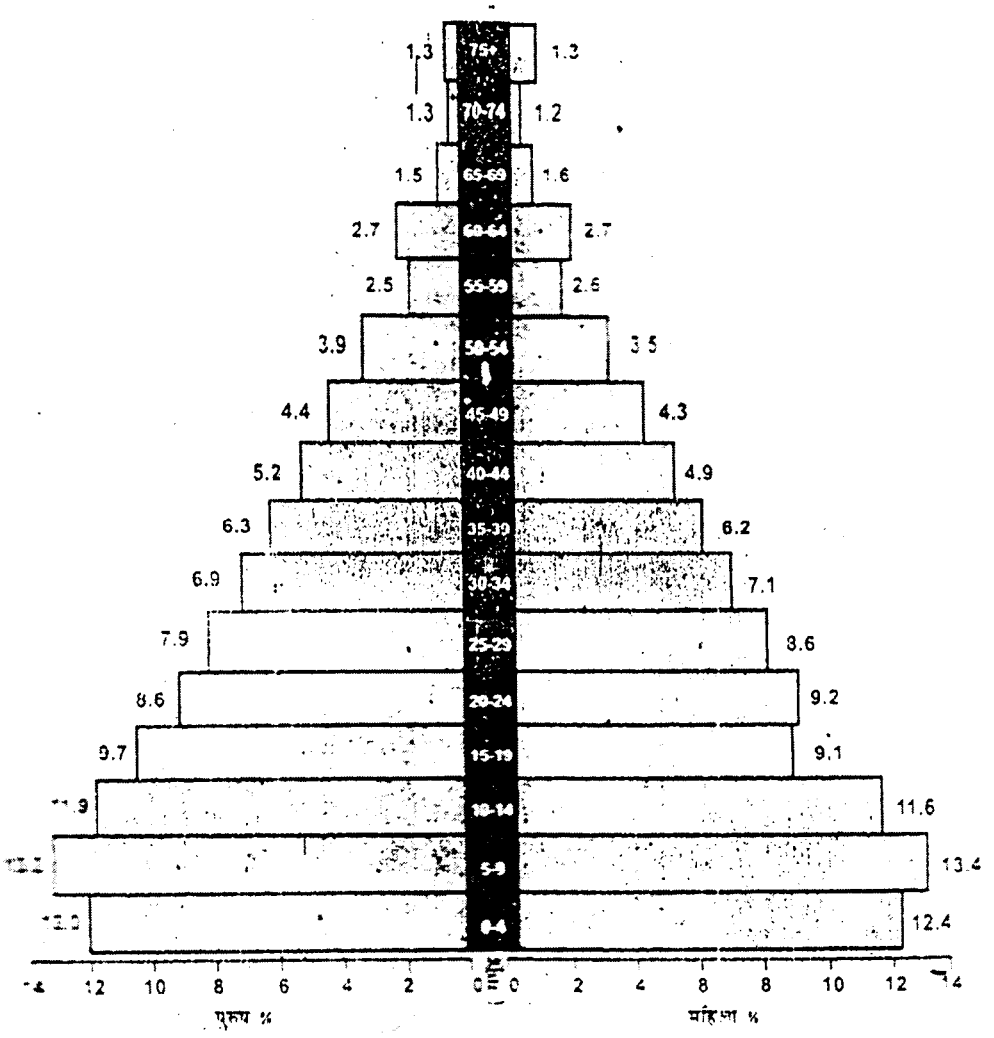

चित्र : भारत आयु और लिंग पिरामीड

(i) नगरों की अपेक्षा गाँवों में उच्च 'जन्म दर पायी जाती है।

(ii) बड़ी संख्या में प्रौढ़ पुरूष आजीविका के लिए गाँवों से नगरों की ओर प्रवास करते हैं।

(iii) गाँवों से नगरों की ओर प्रवास करने वाले प्रौढ़ जब वृद्धा अवस्था को प्राप्त होते हैं तो वे अपने ग्रामीण घरों में पुनः वापस लौट जाते हैं।

4.9 आयु एवं लिंगानुसार साक्षरता (Literacy by Age & Sex)

भारत में साक्षरता दर 1951 में 18.33 प्रतिशत से बढ़कर 2001 में 64.84 प्रतिशत हो गयी। अर्थात 50 वर्षों में साक्षरता दर में 3.5 गुणा से भी अधिक वृद्धि हुई। सन् 2001 में पुरूषों तथा स्त्रियों की साक्षरता दर क्रमशः 75.26 तथा 53.67% थी। अर्थात 2001 में तीन-चौथाई से अधिक पुरुष तथा आधी से अधिक महिलाएँ साक्षर थी। 2001 में 1991 की तुलना में साक्षरता दर में 13.17% की वृद्धि हुई। यह वृद्धि पुरुषों एवं महिलाओं में क्रमशः 11.72 तथा 14.87 प्रतिशत थी। इस प्रकार यह वद्धि दर स्वतंत्र भारत में सबसे अधिक थी।

भारत में साक्षरता दर (1951-2001)

जनगणना वर्ष	कुल	पुरुष	महिलाएँ
1951	18.33	27.16	8.86
1961	28.30	40.40	15.35
1971	34.45	45.96	21.97
1981	43.57	56.38	29.76
1991	52.21	64.13	39.29
2001	64.84	75.26	53.67

Source - India 2008, A Reference Annual P. 11

तालिका से स्पष्ट है कि 1951 के बाद महिलाओं के साक्षरता दर में भी तेज गति से वृद्धि हुई है। महिलाओं की साक्षरता दर जहाँ 1982 में 8.86% थी, जो वर्ष 2001 में बढ़ कर 53.67% हो गई। इसे हमारे साक्षरता अभियान बहुत बड़ी उपलब्धि माना जाता है।

4.10 निष्कर्ष (Summing-up)

भारत के लिंगानुपात एवं आयु संरचना के अध्ययन से पता चलता है। भारत जैसे देश का औसत लिंगानुपात 933 है जो पुरुषों के पक्ष में है लेकिन ग्रामीण नगरीय, सामाजिक संरचना एवं राज्यानुसार लिंगानुपात में असमानता पायी जाती है। नगरों में पुरुषों का अनुपात अधिक है जबकि गाँव में तुलनात्मक रूप से स्त्रियों की संख्या अधिक है। सामाजिक संरचना के आधार पर इसाईयों में स्त्रियों का अनुपात सर्वाधिक है जबकि सिक्ख समुदाय में लिंगानुपात निम्नतम है। राज्यानुसार केरल में लिंगानुपात सबसे अधिक एवं दमन एवं दीप में सबसे कम है। भारत में लिंगानुपात कम होने का सबसे महत्वपूर्ण कारण सामाजिक कुरीतियाँ एवं परम्परागत विचारधारा है।

अगर हम आयु-संरचना के आँकड़ों पर गौर करें तो पता चलता है कि भारत में बाल आयु वर्ग एवं युवा वर्ग की बहुलता है। इस प्रकार भारत को युवाओं का देश कहा जा सकता है। जबकि, यहाँ वृद्ध आयु वर्ग का अनुपात सबसे कम है।

विभिन्न आयु वर्ग एवं लिंगानुपात पर साक्षरता का स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। 2001 के अनुसार देश की आधी से अधिक महिलाएँ एवं चौथाई से अधिक पुरुष साक्षर हैं जो हमारी महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

4.11 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(1) लिंगानुपात परिकलन की विधियों का उल्लेख करें।

(2) आयु संरचना के विश्लेषण की विधियों का उल्लेख करें।

(3) लिंग संयोजन एवं आयुसंयोजन से क्या समझते हैं?

(4) लिंगानुसार भारत की साक्षरता पर प्रकाश डालें।

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(1) भारत में जनसंख्या के लिंग संरचना को स्पष्ट करें।

(2) भारत में जनसंख्या की आयु संरचना को स्पष्ट करें।

(3) आयु-लिंग पिरामिड पर टिप्पणी लिखिए।

4.12 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) जनसंख्या भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य।

(2) जनसंख्या भूगोल- डॉ० रामदेव त्रिपाठी।

(3) सामाजिक भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य।

(4) Geography of Population - R.C. Chandana

(5) भारत का भूगोल - विरेन्द्र सिंह चौहान

(6) भारत का वृहद भूगोल - डॉ० पी० आर० चौहान, और डा० महातम प्रसाद।

❖❖❖

भारत के प्रमुख धर्म
(Major Religions of India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

5.0 उद्देश्य (Objective)
5.1 परिचय (Introduction)
5.2 धर्म की परिभाषा (Definition of Religion)
5.3 धर्म का वर्गीकरण (Classification of Religions)
5.4 भारत के प्रमुख धर्म (Major Religions of India)
5.5 भारत में धार्मिक संरचना (Religions Structure in India)
5.6 भारत में धार्मिक अल्पसंख्यक (Religious Minorities in India)
5.7 धर्मानुसार लिंग संरचना (Sex Structure By Religion)
5.8 धर्मानुसार साक्षरता (Literacy by Religion)
5.9 निष्कर्ष (Conclusion)
5.10 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)
(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)
(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)
5.11 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

5.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ के की प्रस्तुति का मुख्य उद्देश्य छात्रों को निम्नलिखित बातों को विस्तार पूर्वक जानकारी देना है-

- धर्म की परिभाषा अर्थ, महत्व के विषय में,
- धर्मों का वर्गीकरण
- भारत में प्रमुख धर्म एवं धार्मिक संघटन

- भारत के अल्पसंख्यक की जानकारी
- विभिन्न धर्मों में लिंगानुपात एवं साक्षरता का स्तर।

5.1 परिचय (Introduction)

धर्म मनुष्य की भावनाओं श्रद्धा और भक्ति का प्रतीक है। यह मनुष्य की अलौकिक शक्ति में विश्वास से संबंधित है। यह मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन को भी प्रभावित करता है। दैवी शक्ति, पाप-पुण्य तथा स्वर्ग-नरक आदि के भय से समाज विरोधी कार्य करने से भयभीत करता है जिससे सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में मदद मिलती है।

धर्म का शाब्दिक अर्थ 'धार्यते इति धर्मः' से है, जिसका तात्पर्य धारण करने योग्य बातों से है। धर्म मनुष्य को शांतिपूर्वक जीवनयापन करने का मार्ग प्रशस्त करता है। प्राचीन भारतीय मनीषियों तथा विदेशी विद्वानों ने धर्म की व्याख्या की है जिसका सार है 'मनुष्य सद्भावपूर्वक सभी प्राणियों का सम्मान करते हुए आत्मनियंत्रण, नैतिकता और निष्ठापूर्वक कर्तव्यों का निर्वहण करके परोपकार की भावना से जीवनयापन करें। ऐसा करने से वह कठिन से कठिन परिस्थितयों का धैर्यपूर्वक सामना करते हए स्वयं तथा परिवार से ऊपर उठकर सम्मान देश तथा विश्व के लिए कल्याणकारी हो सकता है।

5.2 धर्म की परिभाषा (Definition of Religion)

धर्म शब्द की उत्पति संस्कृत की 'धृ' धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'धारण करना'। जबकि अंग्रेजी में 'Religion' शब्द की उत्पति 'Religare' (रेलिगेयर) शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है 'बाँधना'। अतः जीवों के प्रति दया 'या' ईश्वर से बांधने की क्रिया धर्म माना जा सकता है। धर्म को कुछ विद्वानों ने अपने-अपने शब्दों में परिभाषित करने का प्रयास किया है। जो इस प्रकार है-

(1) "धर्म अति प्राकृतिक प्राणियों, शक्तियों, स्थानों और अन्य वस्तुओं से संबंधित विश्वासों एवं रीतियों की सुसंगत प्रणाली है।" - 'एच० एम० जानसन'

(2) "धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वासों तथा आचरणों की वह सम्पूर्ण व्यवस्था है जो इस पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदाय में संयुक्त करती है।" - दुर्खीम

"धर्म न तो अज्ञात शक्तियों का अस्पष्ट भय है और न भय की उपज। बल्कि किसी समुदाय के सभी सदस्यों के साथ उस समुदाय की अच्छाई चाहनेवाली ऐसी शक्ति के साथ जो उसके नियमों तथा आचार व्यवस्था की रक्षा करती है।" - 'राबर्टसन'

इसी प्रकार अनेक विद्वानों ने धर्म की परिभाषा अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत की है। वास्तव में सामाजिक दृष्टिकोण से "धर्म विश्वासों, प्रतीकों, मूल्यों तथा क्रियाओं की संस्थापित पद्धति है जो समाज के परमजीवन आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।"

5.3 धर्म का वर्गीकरण (Classification of Religions)

विश्व स्तर पर धर्म के अनेक प्रकार का प्रचलन है, जिसमें कुछ का संख्यात्मक एवं क्षेत्रीय आकार बड़ा है, कुछ मध्यम आकार के हैं एवं कुछ का आकार बहुत ही छोटा है। कुछ धर्मों में एक ईश्वरवादी विचारधारा को मान्यता प्राप्त है और कुछ धर्मों में प्राकृतिक शक्तियों को ही सर्वशक्तिमान माना गया है। भूगोलवेत्ताओं का अध्ययन किसी भी धर्म के उसे विशेषताओं पर आधारित होता है जो उसके क्षेत्रीय विस्तार को प्रभावित करता है। इस प्रकार विश्व के सभी धर्मों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है-

(1) नृजातीय धर्म–तंत्र की जनसंख्या कम न्यूनतम की जनसंख्या कम, न्यूनतम क्षेत्रीय विषमता एवं सांस्कृतिक विचाराधारा में समरूपता पाई जाती है। इनकी धार्मिक क्रियायें प्रकृति द्वारा प्रभावित होती हैं। ये धर्म अपने प्रचार-प्रसार के लिए अधिक प्रयत्नशील नहीं होते। हिन्दू, यहूदी, शिन्टो, चीनी धर्म इसके उदाहरण हैं।

(2) जनजातीय धर्म—यह विशिष्ट प्रकार का नृजातीय धर्म है। इसकी पहचान आधुनिक समाज से अलग है। ऐसे धर्मावलम्बियों का प्रकृति से घनिष्ठ संबंध होता है। ऐसे धर्मों में अलग-अलग जनजातियों का अपन अलग-अलग समूह होता है। ऐसे धर्मों के आकार छोटा होता है। जीववाद, शायनवाद तथा अधार्मिक जनजातीय धर्म को इसके अंतर्गत रखा जा सकता है।

(3) सार्वभौमिक धर्म—ऐसे धर्म प्रचार-प्रसार, धर्म परिवर्तन के द्वारा अपनी संख्या का विस्तार करते हैं। इनकी सदस्यता केवल धर्म विश्वास की घोषणा द्वारा की जा सकती है। इसाई धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म इसके उदाहरण हैं।

5.4 भारत के प्रमुख धर्म (Major Religions of India)

भारत एक महान प्राचीन देश है जिसने हिंदू, बौद्ध, जैन तथा सिक्ख जैसे महत्वपूर्ण धर्मों को जन्म दिया। इसके अलावा इस्लाम तथा ईसाई धर्म के अनुयायी भी ऐतिहासिक काल में यहाँ आकर बच गए। 12वीं शताब्दी में आक्रमणकारियें के साथ इस्लाम धर्म के लोगां का आगमन उत्तर-पश्चिम भारत में हुआ और कालांतर में ये गंगा घाटी से होकर बंगाल तक फैल गये। ईसाई धर्म के लोग ईसा शताब्दी के प्रारंभिक काल में कोचीन में आकर बसे और धीरे-धीरे इनका विस्तार हुआ। पारसी धर्म के लोग 7वीं शताब्दी में मुसलमानों की क्रूरता से बचने के लिए भारत आये और पश्चिमी तटीय प्रदेश में बस गए। इस प्रकार भारत में कुल सात धर्म है। इन धर्मों ने न केवल भारत के विभिन्न भागों में संस्कृति को प्रभावित किया, बल्कि बस्तियों भवन-निर्माण कला और रीति-रिवाजों पर गहरा प्रभाव डाला है। इस प्रकार धर्म ने भारत के सामाजिक जीवन में विविधता प्रदान की है। परन्तु भारत एक धर्म-निरपेक्ष देश है, जिससे विभिन्न धर्मों के अनुयायी एकता सूत्र में बंधे हुए है। इस प्रकार भारत की धार्मिक विविधता में भी एकता है। भारत की कुल जनसंख्या का (लगभग 0.01) एक छोटा सा भाग ऐसा भी है जो किसी भी धर्म को नहीं मानती।

5.5 भारत में धार्मिक संरचना (Religious Structure in India)

भारत में जातियों व भाषाओं की भिन्नता की तरह धर्मों में भी भिन्नता पायी जाती है। भारत के विभिन्न धर्मों एवं धार्मिक संयोजन की विशेषता निम्नलिखित है-

(1) हिन्दू (Hindus)—हिन्दू धर्म भारत का सबसे प्राचीन धर्म है जिसका आगमन ईसा से लगभग 3000 वर्ष पहले भारत के आर्यों के आगमन के साथ हुआ। पहले इसे आर्य धर्म ही कहा जाता था। इसी धर्म के अंतर्गत वेदों की रचना हुई। अत: इसे वैदिक धर्म भी कहा जाता है। पुराणों की रचना के साथ इसे पौराणिक धर्म भी कहा जाने लगा। भारत के सात प्रमुख धर्मों में हिन्दुओं की जनसंख्या सबसे अधिक है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 82.75 करोड़ हिन्दू है जो देश की कुल जनसंख्या का 80.5% है। हिन्दू धर्म की बहुलता के कारण इसे हिन्दुस्तान अर्थात हिन्दुओं का देश भी कहा जाता है। भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का 12% भाग हिन्दू है। जो विश्व के कुल ईसाई जनसंख्या से थोड़ा कम तथा मुस्लिम जनसंख्या के लगभग बराबर है।

भारत के अधिकांश भागों में हिन्दूओं का बहुमत है। भारत के 300 जिलों में 60% से अधिक हिन्दू है। केवल सुदूर उत्तर (जम्मू-कश्मीर) तथा उत्तरी पूर्वी भारत से ही हिन्दू 20% से कम है राज्य स्तर पर विश्लेषण से पता चलता है कि हिमाचल प्रदेश में हिन्दुओं की जनसंख्या सर्वाधिक 95.4% और मिजोरम में सबसे कम 3.6% है। हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, आंध्रप्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा, कर्नाटक तथा बिहार में हिन्दुओं का अनुपात राष्ट्रीय औसत से अधिक है, जबकि उत्तर-पूर्वी राज्यों जम्मू-कश्मीर तथा पंजाब में यह राष्ट्रीय औसत से बहुत कम है।

भारत : 1961 और 2001 में धर्मानुसार जनसंख्या

	1961		2001	
धार्मिक समूह	**करोड़ व्यक्ति**	**प्रतिशत**	**करोड़ व्यक्ति**	**प्रतिशत**
1. हिन्दू	36.65	83.5	82.75	80.50
2. मुस्लिम	4.69	10.7	18.82	13.40
3. ईसाई	1.07	2.4	2.40	2.33
4. सिक्ख	0.78	1.8	1.92	1.84
5. बौद्ध	0.32	0.7	0.79	0.76
6. जैन	0.20	0.5	0.42	0.40
7. अन्य	0.16	0.4	0.72	0.77

स्रोत : 2001 के आँकड़े की जनगणना द्वारा 2004 में प्रकाशित आंकड़े पर आधारित

(2) मुस्लिम (Muslims)—यह भारत का दूसरा बड़ा धार्मिक सम्प्रदाय है। इसका आगमन 12वीं शताब्दी में आक्रमणकारियों के साथ हुआ। सबसे पहले यह उत्तर-पश्चिम भारत तक ही सीमित रहा, परन्तु धीरे-धीरे इसका प्रसार गंगा घाटी से होकर पश्चिम बंगाल तक हुआ। प्रायद्वीपीय भारत में इसका प्रसार कम हो गया।

2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 13.78 करोड़ मुसलमान हैं जो भारत की कुल जनसंख्या का 13.4 प्रतिशत है। भारतीय मुसलमानों की संख्या पाकिस्तान की कुल जनसंख्या के लगभग बराबर है और मुस्लिम जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में चौथा स्थान है। जहाँ तक राज्यानुसार मुस्लिम जनसंख्या के वितरण का सवाल है तो सबसे अधिक मुसलमान उत्तरप्रदेश में रहते हैं। दूसरा स्थान पश्चिम बंगाल एवं तीसरा बिहार का है। मुसलमानों का सबसे कम अनुपात मिजोरम एवं सबसे अधिक अनुपात जम्मू-कश्मीर में पाया जाता है। केन्द्र शासित प्रदेशों में सबसे अधिक अनुपात 95.5% लक्षद्वीप में है। असम, बिहार, झारखंड सहित जम्मू-कश्मीर, केरल, उत्तर प्रदेश उत्तराखण्ड और पश्चिम बंगाल में मुसलमानों की जनसंख्या का अनुपात राष्ट्रीय औसत से अधिक है।

(3) ईसाई (Christians)—ईसा शताब्दी के प्रारंभिक काल में सीरिया के ईसाई ट्रावनकोर कोचीन में आकर बसे। वे अन्य इसाईयों से भिन्न है। ईसाईयों की रोमन कैथोलिक व प्रोटैस्टेण्ट आदि शाखाये यहाँ पाई जाती है। यहाँ के निम्न आय वर्ग की अनुसूचित जातियों और जनजातियों तथा पहाड़ी जातियों से ईसाई धर्मोंत्तरण अधिक हुआ जो अभी भी जारी है।

2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 2.4 करोड़ ईसाई है जो आस्ट्रेलिया तथा कई यूरोपीय देशों की जनसंख्या से अधिक है। ईसाइयों का अधिक संकेन्द्रण उत्तर-पूर्वी राज्यों में है। नागालैण्ड की कुल जनसंख्या का 90.10% भग ईसाईयों का है। इसी प्रकार मिजोरम की 87% और मेघालय की 70% जनसंख्या ईसाईयों का है। दक्षिण-भारत में गोवा तथा केरल में ईसाईयों का अनुपात अधिक है। वास्तविक संख्या की दृष्टि से केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, बिहार, मिजोरम तथा गोवा महत्वपूर्ण है।

(4) सिख (Sikhs)—यह धर्म 16वीं शताब्दी में हिन्दू के अन्तर्गत उदित हुआ। इस धर्म में अनेक देवी-देवताओं मूर्ति-पूजा, जाति प्रथा आदि का खण्डन किया। वास्तव में मुसलमानों की क्रूरता से रक्षा के लिए सिख धर्म की नींव पड़ी।

भारत में 1.92 करोड़ सिक्ख रहते हैं जो भारत की कुल जनसंख्या का 1.9 प्रतिशत भाग है। ये मुख्यत: पंजाब में केन्द्रित है। पंजाब के अधिकांश जिलों की 60-65% जनसंख्या सिक्खों की है। पंजाब की कुल जनसंख्या का 59.9% सिक्खों का है। पंजाब की कुल जनसंख्या का 59.9% सिक्खों का है। शेष हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखण्ड के तराई प्रदेश तथा दिल्ली में पाए जाते हैं।

(5) बौद्ध (Buddhists)—यह भी हिन्दू धर्म की परिवर्तित शाखा है। ईसा पूर्व 6वीं शताब्दी में गौतम बुद्ध ने इसकी नींव रखी। इसका सर्वाधिक प्रचार-प्रसार गंगा की घाटी में हुआ। कालांत्तर में यह पूर्वी एशिया एवं दक्षिण पूर्वी एशिया में फैल गया।

भारत में 7.95 लाख बुद्ध हैं जो मुख्यत: महाराष्ट्र, अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम तथा जम्मू-कश्मीर के लद्दाख जिलों में केन्द्रित हैं। कुछ बुद्ध मिजोरम, त्रिपुरा तथा हिमाचल प्रदेश में भी पाए जाते हैं। उत्तर भारत बौद्ध धर्म का जन्म स्थल होने के कारण यहाँ बुद्ध अनुयायियों की संख्या अधिक है। भारत की कुल जनसंख्या का मात्र 6: महाराष्ट्र में है लेकिन महाराष्ट्र की कुल जनसंख्या का 67% बौद्ध है। महाराष्ट्र के बुद्ध मुख्यत: डा० बी० आर० अम्बेडकर की देन है, जिन्होंने बहुत से हरिजनों को बुद्ध धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया।

(6) जैन (Jains)—जैन धर्म भी हिन्दू धर्म की ही एक शाखा है। ये जीवों के प्रति अहिंसा पर अधिक बल देता है। अधिकांशत: जैन धर्म के अनुयायी शाकाहारी एवं पेशे से व्यापारी होते हैं।

भारत में 42 लाख जैन धर्म के लोग हैं जो देश के पश्चिमी भाग में दूर-दूर तक वितरित हैं। महाराष्ट्र में 15 लाख, राजस्थान में 6.5 लाख, गुजरात में 5.2 लाख, और मध्यप्रदेश में 5.4 लाख जैनियों की संख्या है। परन्तु किसी भी राज्य का 6% से अधिक जनसंख्या जैनियों की नहीं है।

(7) पारसी अथवा जरस्तु (Paosis or Zoroastrians)—ये लोग 7वीं शताब्दी में मुसलमानों की क्रूरता से बचने के लिए भाग कर पश्चिमी एशिया से भारत आए। ये तटीय भारत में बस गए। ये मुख्यत: सूर्य एवं अग्नि की पूजा करते हैं।

भारत में इनकी संख्या 10 लाख के आसपास है जो कुल जनसंख्या का 0.4% भाग है। 90% पारसी मुम्बई तथा सूरत में केंद्रित है।

राज्यानुसार कुल जनसंख्या में विभिन्न धर्मावलंबियों का प्रतिशत

	राज्य	हिन्दू	मुस्लिम	ईसाई	सिक्ख	बुद्ध	जैन	अन्य
1.	जम्मू-कश्मीर	29.6	67.0	0.2	2.0	1.1	0.0	0.0
2.	हिमाचल प्रदेश	95.4	2.0	0.1	1.2	1.2	0.0	0.0
3.	पंजाब	36.9	1.6	1.2	59.9	0.2	0.2	0.0
4.	हरियाणा	28.2	5.8	0.1	5.5	2.0	0.3	0.00
5.	चंडीगढ़	78.6	39.9	0.8	16.1	0.1	0.3	0.0
6.	उतराखंड	85.0	11.9	0.3	2.5	0.1	0.1	0.0
7.	दिल्ली	82.0	11.7	0.9	4.0	0.2	1.1	0.0
8.	राजस्थान	88.8	8.5	0.1	1.4	0.0	1.2	0.0
9.	उत्तर प्रदेश	80.6	18.5	0.1	0.4	0.2	0.1	0.0
10.	बिहार	83.2	16.5	0.1	0.0	0.0	0.0	0.1

11.	पश्चिम बंगाल	72.5	25.2	0.6	0.1	0.3	0.1	1.1
12.	सिक्किम	60.9	1.4	6.7	0.2	28.1	0.0	2.4
13.	अरूणाचल प्रदेश	34.6	1.9	18.7	0.2	0.0	0.0	30.7
14.	नागालैंड	7.7	1.8	90.6	0.1	0.1	0.1	0.3
15.	मणिपुर	46.0	8.8	34.0	0.1	0.1	0.1	10.9
16.	मिजोरम	3.6	1.1	87.0	0.0	7.9	0.0	0.3
17.	त्रिपुरा	85.6	8.0	3.2	0.0	3.1	0.0	0.0
18.	मेघालय	13.3	4.3	77.3	0.1	0.2	0.0	11.5
19.	असम	64.9	30.9	3.7	0.1	0.2	0.1	0.1
20.	उड़ीसा	94.4	2.1	2.4	0.0	0.0	0.0	1.0
21.	झारखंड	68.9	13.8	4.1	0.3	0.0	0.1	0.0
22.	छत्तीसगढ़	94.7	2.0	1.9	0.3	0.3	0.3	0.5
23.	मध्यप्रदेश	91.1	6.4	0.3	0.2	0.3	0.9	0.7
24.	गुजरात	89.1	9.1	0.6	0.1	0.0	1.0	0.1
25.	दमन एवं दीव	89.7	7.8	2.1	0.1	0.1	0.2	0.1
26.	दादर नगर हवेली	93.5	3.0	2.4	0.1	0.2	0.4	0.0
27.	महाराष्ट्र	80.4	10.6	1.1	0.0	6.0	1.3	0.2
28.	आंध्रप्रदेश	89.0	9.2	1.6	0.0	0.0	0.1	0.0
29.	कर्नाटक	83.9	12.2	1.9	0.0	0.7	0.8	0.2
30.	गोवा	65.6	6.8	26.7	0.1	0.0	0.1	0.0
31.	लक्षद्वीप	3.7	95.5	0.8	0.0	0.0	0.0	0.0
32.	केरल	56.2	24.7	19.0	0.0	0.0	0.0	0.0
33.	तमिलनाडु	88.1	5.6	6.1	0.0	0.0	0.1	0.0
34.	पांडिचेरी	86.8	6.1	6.9	0.0	0.0	0.01	0.0
35.	अंडमान और निकोबार	69.2	8.2	21.7	0.4	0.1	0.0	0.1

स्रोत - Census of India 2001, Series - 01

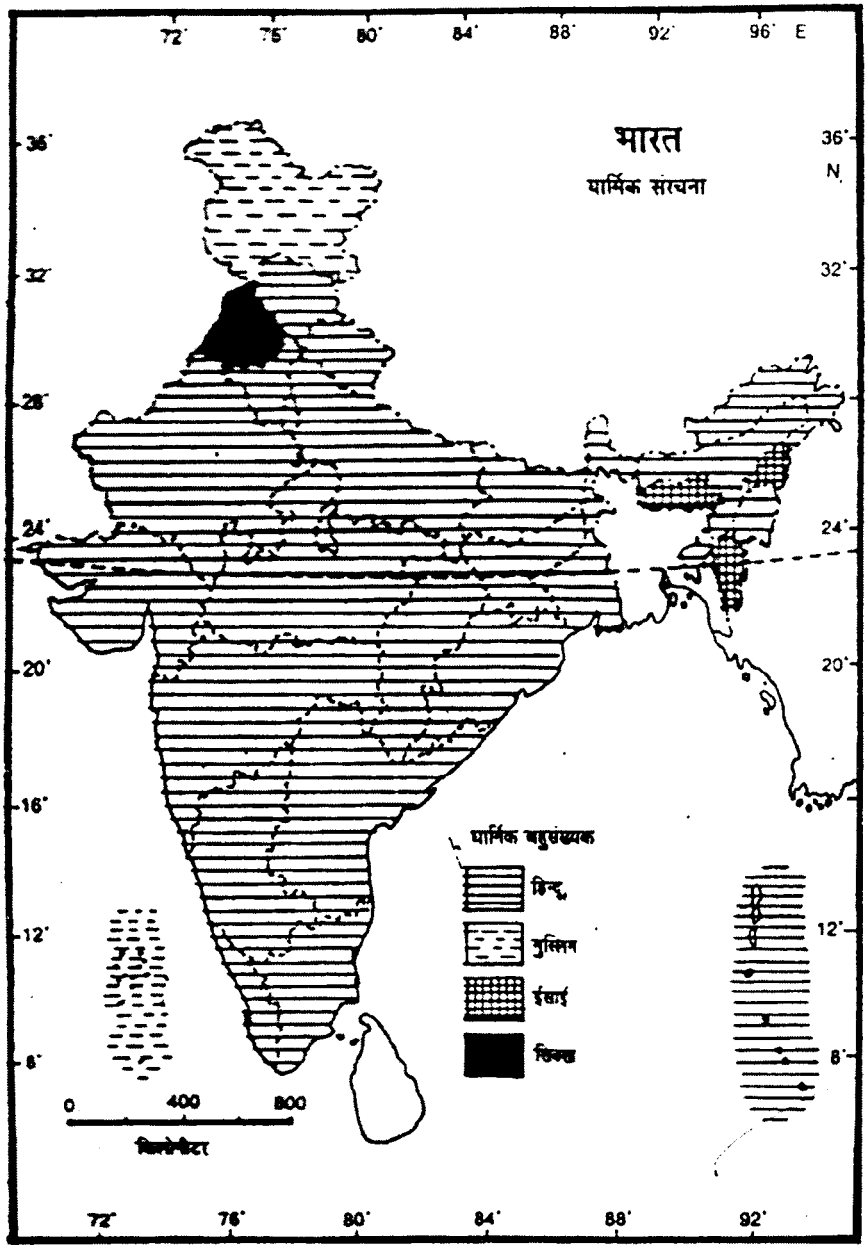

चित्र : भारतीय जनसंख्या की धार्मिक संरचना

5.6 भारत में धार्मिक अल्पसंख्यक (Religious Minorities in India)

(1) हिन्दू – भारत में हिन्दूओं की बहुलता है। शायद इसी कारण इसे हिन्दुस्तान के नाम से भी जाना जाता है। परन्तु उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि जम्मू-कश्मीर पंजाब तथा पूर्वोत्तर राज्यों जैसे मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश जैसे राज्यों में हिन्दुओं की अल्प संख्या है।

(2) मुस्लिम — हालाँकि भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा मुस्लिम आबादी वाला राष्ट्र है परन्तु, अन्य धार्मिक जनसंख्या की तुलना में जम्मू-कश्मीर को छोड़कर देश के अन्य हिस्सो में मुसलमानों की संख्या अल्प है।

(3) ईसाई — देश के पूर्वोत्तर राज्यों-अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मिजोरम आदि को छोड़कर शेष राज्यों में ईसाई अल्पसंख्यक है।

(4) सिक्ख — पंजाब को छोड़कर देश के अन्य भागों में सिक्खों की जनसंख्या नगण्य है।

(5) बौद्ध — जम्मू-कश्मीर के जम्मू और उत्तरी हिमाचल प्रदेश को छोड़कर देश के शेष भागों में बौद्ध अल्पसंख्यक हैं। वैसे भी भारत में इनकी संख्या मात्र 79.9 लाख के आसपास हैं।

(6) जैन — भारत में जैनियों की संख्या मात्र 42 लाख है जो सभी भागों में अल्पसंख्यक है।

(7) पारसी — इनकी कुल संख्या मात्र 10 लाख के आसपास है जो तुलनात्मक रूप से नगण्य हैं।

इसके अलावा भारत की कुल जनसंख्या का एक बहुत ही छोटा भाग किसी भी धर्म को नहीं मानता है।

5.7 धर्मानुसार लिंग-संरचना (Sex Structure by Religion)

भारतीय जनसंख्या में औसत लिंगानुपात 933 स्त्रियाँ प्रति हजार पुरूष पर हैं। लेकिन, वास्तव में अलग-अलग धार्मिक समुदायों की जनसंख्या का लिंगानुपात अलग-अलग है।

हिन्दुओं में लिंगानुपात 931 है जबकि मुसलमानों का थोड़ा अधिक 553 है। ईसाई में लिंगानुपात सबसे अधिक 1009 पाया जाता है। सर्वाधिक चिंताजनक स्थिति सिक्खों की है उसमें लिंगानुपात मात्र 893 है। बौद्ध धर्म में लिंगानुपात 953 एवं जैनियों का 992 दर्ज किया जाता है। अर्थात कहा जा सकता है कि लिंगानुपात की दृष्टि से सबसे बेहतर स्थिति ईसाईयों की एवं सबसे बदत्तर स्थिति सिक्खों की है।

5.8 धर्मानुसार साक्षरता (Literacy by Religion)

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की औसत साक्षरता दर 64.8% है। अगर हम पुरुष और स्त्रियों की अलग-अलग साक्षरता दर की बात करें तो यह औसत क्रमशः 75.3 प्रतिशत एवं 53.7% है। यानी भारत में चौथाई से अधिक पुरुष एवं आधी से अधिक महिलाएँ साक्षर हैं।

भारत में अगर धर्मानुसार साक्षरता का अध्ययन किया जाय तो पता चलता है कि यह औसत जैनियों का सबसे अधिक 94.1% एवं मुसलमानों का सबसे कम 59.1% है। सभी वर्गों में स्त्रियों की साक्षरता दर कम है एवं पुरूषों का अधिक है। केवल जैन धर्म के लोगों में स्त्रियों की साक्षरता दूर सबसे अधिक 90.6% है एवं मुसलमानों में स्त्री साक्षरता दर अन्य सभी धर्मों की तुलना में सबसे कम है। भारत में धर्मानुसार स्त्रियों एवं पुरुषों की साक्षरता पर नीचे तालिका से स्पष्ट की गयी है।

धर्म के आधार पर साक्षरता दर : 2001

	धर्म	साक्षरता दर		
		कुल	पुरुष	स्त्री
1.	हिन्दू	65.1	76.2	53.2
2.	मुस्लिम	59.1	67.6	50.1
3.	ईसाई	80.3	84.4	76.2
4.	सिक्ख	69.4	75.2	63.1
5.	बौद्ध	72.7	83.1	61.7
6.	जैन	94.1	97.4	90.6
7.	अन्य	47.0	60.8	33.2
	कुल	64.8	75.3	53.7

स्रोत : Census of India 2001, Series-1

5.9 निष्कर्ष (Summing up)

उपर्युक्त अवलोकन के आधार पर कहा जा सकता है कि लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में धर्म का विशेष महत्त्व होता है। धार्मिक दर्शन मानव के जीवन से संबंधित विभिन्न पक्षों को प्रभावित करता है।

भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में कुल सात प्रकार के धर्म देखे जाते हैं, परंतु विभिन्न धर्मों के लाग एकता सूत्र में बंधे हुए हैं, जो यहाँ की अनोखी विशेषता है। भारत में हिन्दुओं की जनसंख्या सबसे अधिक है एवं पारसी धर्म के लोगों ी संख्या सबसे कम पाई जाती है। हिन्दू के बाद मुसलमान की जनसंख्या देश की दूसरी बड़ी धार्मिक जनसंख्या है। लिंगानुपात के क्षेत्र में ईसाई का सबसे अधिक 1009 एवं सिक्खों का सबसे कम 8.93 है। साक्षरता क्षेत्र में जैन एवं बौद्ध की स्थिति सबसे अच्छी है।

इस प्रकार विभिन्न धर्मों ने भारतीय सामाजिक जीवन में विविधता प्रदान की है। लेकिन, यहाँ धार्मिक विवधिता में भी एकता है।

5.10 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(1) धर्मों का वर्गीकरण प्रस्तुत करें।

(2) भारत हिन्दू बहुलता वाला राष्ट्र है कैसे?

(3) इस्लाम धर्म का भारत में वितरण पर प्रकाश डालें।

(4) बौद्ध एवं जैनियों का वितरण भारत में कहाँ-कहाँ है?

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(1) भारत के प्रमुख धार्मिक समूहों के प्रादेशिक वितरण पर प्रकाश डालें।

(2) धार्मिक अल्पसंख्यक से क्या समझते हैं? भारत में राज्यानुसार धार्मिक अल्पसंख्यक का विवरण दीजिए। क्या भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है?

5.11 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) जनसंख्या भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य।

(2) जनसंख्या भूगोल- डॉ० रामदेव त्रिपाठी।

(3) Geography of Population - R.C. Chandana

(4) Population Geography - J.I. Clarke

(5) सामाजिक भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य।

❖❖❖

भारत की मुख्य भाषाएँ
(Major Languages of India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

6.0 उद्देश्य (Objective)
6.1 परिचय (Introduction)
6.2 भाषा की परिभाषा (Definition of Language)
6.3 भाषा का महत्त्व (Importance of Language)
6.4 भारत के प्रमुख भाषाई समूह (Major Linguistic Group of India)
6.5 भाषा परिवार (Linguistic Families)
6.6 प्रमुख भाषाएँ और भाषा प्रदेश (Major Languages & Linguistic Region)
6.7 भारत का भाषाई संघटन (Languistic Composition of India)
6.8 निष्कर्ष (Conclusion)
6.9 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)
(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)
(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)
6.10 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

6.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य छात्रों को निम्नलिखित बिन्दुओं पर छात्रों को विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान करनी है।

- भाषा की परिभाषा एवं महत्त्व
- भारत के भाषाई समूह एवं परिवार के संदर्भ में
- भारत में प्रयोग होने वाली प्रमुख भाषाएँ।
- भारत की मुख्य भाषा प्रदेश।
- भारत के मुख्य भाषाई संघटन एवं उनके प्रादेशिक वितरण।

6.1 परिचय (Introduction)

भाषा संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अवयव है। जिसके माध्यम से मनुष्य परस्पर एक-दूसरे के विचारों को सुनकर-समझकर परस्पर सहयोग-संगठन एवं सामंजस्य स्थापित करते हुए जीवनयापन करते हैं। भाषा के द्वारा ही मानव समुदायों में एकता एवं अपनत्व की भावना का विकास होता है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक एवं मनवीय दशाओं में पर्याप्त क्षेत्रीय भिन्नता पाये जाने के कारण उनकी भाषा में भी भिन्नता पायी जाती है। फलस्वरूप 'जनसंख्या भूगोल' में भाषाई संरचना का अध्ययन अति महत्वपूर्ण है। इसकी महत्ता के कारण ही 'भाषा भूगोल' (Linguistic Geography) भूगोल की एक शाखा के रूप में उभर कर सामने आ रही है। जिसमें हम भाषा और पर्यावरण के पारस्परिक अन्तर्सबंध का अध्ययन किया जाता है।

हम जानते हैं कि भारत विविधताओं का देश है। यहाँ प्राकृतिक एवं मानवीय दशाओं में पर्याप्त भिन्नता है। अत: भारत जैसे देशों में विभिन्न प्रकार की भाषाओं का होना स्वाभाविक है। अत: भारत जैसे देशों में भाषाई संरचना का अध्ययन महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

6.2 भाषा की परिभाषा (Definition of Language)

भाषा एक साधन है, जिसके द्वारा व्यक्तियों या समूहों में बातचीत करने तथा एक-दूसरे के द्वारा कही बातों को समझने सामंजस्य स्थापित करने में आसानी होती है। इसका प्रयोग मौखिक एवं लिखित दोनों रूप में होता है। कुछ विद्वानों ने भाषा की परिभाषा अपने शब्दों में दी है। ये निम्नलिखित हैं-

1. ''भाषा बोली जाने वाली या लिखित प्रतीकों की एक प्रणाली है, जिसके द्वारा किसी सामाजिक समूह के सदस्य परस्पर सम्पर्क और अन्त:क्रिया करते हैं।''

   - ई० ए० स्टुटैवेण्ट (1947)

2. ''भाषा बातचीत की संगठित पद्धति है जिसके द्वारा एक-दूसरे से संचार करते हैं।''

   - ए० आई० क्लार्क 1985)

3. ''भाषा परम्परागत ढंग से बोली अथवा लिखी जाने वाली प्रतीकों की एक प्रणाली है, जिसके द्वारा दो व्यक्ति या समूह परस्प विवेकपूर्ण सम्पर्क करते हैं।

   - 'माजिद हुसेन' (1997)

6.3 भाषा का महत्त्व (Importance of Language)

पारस्परिक सम्पर्क और संस्कृति एवं विचारों के आदान प्रदान के लिए भाषा को एक महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। भाषा के अभाव में सामाजिक सम्पर्क संभव नहीं है। भाषा के माध्यम से ही दो समूहों या प्रदेशों के मध्य संस्कृति तथा विचारों की लेन-देन संभव हो पाती है। समान भाषा को बोलने और समझने वाले व्यक्तियों अथवा समूहों में सम्पर्क सुगम होता है और अंत:क्रिया अधिक होती है।

भाषा और राष्ट्र के मध्य भी घनिष्ठ संबंध है। भाषाई एकता के आधार पर ही राष्ट्रों के सीमाओं का निर्धारण होता है। अलग-अलग देशों की अलग-अलग राष्ट्रभाषा होती है जो राष्ट्र की एकता का प्रतीक होती है। भारत में भी विभिन्न प्रांतों की सीमाओं के निर्धारण के लिए भाषा को महत्वपूर्ण आधार माना गया है। पंजाब, हरियाणा, प० बंगाल, गुजरात आदि राज्य इसके सुंदर उदाहरण है।

6.4 भारत के प्रमुख भाषाई समूह (Major Languistic Groups of India)

भारतीय जनसंख्या यहाँ के मूल निवासी नहीं है, भारत में विभिन्न नृ-जातीय वर्ग आकर बसे जो अपने साथ विविध प्रकार की भाषाएँ तथा बोलियाँ ले आए। अत: भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न प्रकार की भाषाओं का होना स्वाभाविक ही है। स्वतंत्रता के बाद भाषा को राज्यों के पुनर्गठन का संतोषजनक आधार माना गया जिससे भाषाई वितरण के भौगोलिक स्वरूप को एक नया राजनीतिक अर्थ प्राप्त हुआ।

वर्ष 1961 की जनगणना के समय भाषाओं से संबंधित विस्तृत जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया गया। 1961 की जनगणना के समय भारत में 1652 भाषाओं के मातृभाषा के रूप में सूचीबद्ध किया गया था। परंतु इनमें 94 भाषाओं में से प्रत्येक भाषा 10,000 से भी कम लोगों द्वारा बोली जाती है। देश की 97% जनसंख्या केवल 23 भाषाएँ बोलती है। इन 23 भाषाओं में अंग्रेजी के अलावा 15 भाषाएँ हमारे संविधान की 8वीं अनुसूची में रखी गई है। 20 अगस्त 1992 के संसदीय कानून में तीन अन्य भाषाएँ नेपाली, कोकणी तथा मणिपुरी को भी सम्मिलित किया गया। इस प्रकार अंगग्रेजी के अलावा संविधान के 8वीं अनुसूची में 18 भाषाएँ दर्ज हैं। ये हैं-

1. कश्मीरी	2. पंजाबी	3. हिन्दी
4. उर्दू	5. बंग्ला	6. असमिया
7. गुजराती	8. मराठी	9. कन्नड़
10. तमिल	11. तेलुगु	12. मलयालम
13. सिंधी	14. संस्कृत	15. उड़िया
16. नेपाली	17. कोकणी	18. मणिपुरी

6.5 भाषा परिवार (Linguistic Families)

भारतीय भाषाओं को चार भाषा-परिवारों के अंतर्गत रखा जा सकता है-

1) भारोपीय (भारतीय-यूरोपीय-आर्य)

2) द्रविड़

3) आग्नेय (आस्ट्रिक)

4) चीनी-तिब्बती भाषाएँ।

यहाँ रोचक जानकारी यह है कि इन चारों भाषा-परिवारों की भाषा बोलने वाले की संख्या में अत्यधिक असमानता है। भारत की कुल जनसंख्या के 73% लोग आर्य भाषाओं को बोलने वाले हैं। जबकि 20% जनसंख्या द्रविड़ भाषा का प्रयोग करती है। देश की कुल जनसंख्या का 1.38% लोग आग्नेय एवं केवल 0.85% लोग चीनी तिब्बती भाषा का प्रयोग करते हैं।

1) दारदी भाषा 'या' आर्य भाषाएँ — भारत की लगभग तीन-चौथाई जनसंख्या आर्य भाषा के विभिन्न रूपों का प्रयोग करती है। इसकी दो मुख्य शाखाएँ हैं।

A) दारदी आर्य भाषाएँ।

B) भारतीय आर्य भाषाएँ।

दारदी आर्य भाषा के अन्तर्गत दरदी, शिना, कांहिस्तानी तथा कश्मीरी भाषाएँ सम्मिलित हैं। इनमें से केवल कश्मीरी बोलने वालों की संख्या 20 लाख से अधिक है। अन्य भाषाओं में किसी का प्रयोग 7000 से अधिक जनसंख्या नहीं करती।

भारतीय आर्य भाषा के अन्तर्गत हिन्दी, बंगाली, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, सिंधी, कच्छी, मराठी, उड़िया, संस्कृत, असमिया, उर्दू सम्मिलित हैं। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिन्दी का संसार में चौथा स्थान है। भारत की 40% जनसंख्या किसी न किसी रूप में हिन्दी का प्रयोग करती है। उर्दू भी हिन्दी से मिलती-जुलती भाषा है। जिसका प्रयोग व्यापक रूप में होता है।

2) द्रविड़ भाषाएँ—द्रविड़ भाषा आर्य भाषाओं से अधिक पुरानी है। अनुमानतः द्रविड़ लोग आर्य से पहले भारत आए थे। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि द्रविड़ भारत के मूल निवासी हैं बाद में आर्य से इन्हें दक्षिण की ओर भगा दिया। इस समय भारत की लगभग 20% जनसंख्या द्रविड़ भाषा का प्रयोग करती है जो दक्षिणी भाग में सीमित है। द्रविड़ परिवार के अन्तर्गत तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम है। ये क्रमशः तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक एवं केरल में बोली जाती हैं।

3) आग्नेय भाषाएँ—भारत में आग्नेय भाषा बोलने वाले लोग भाषाओं के आस्ट्रो-एशियाई उप-परिवार के हैं। इस उपपरिवार की भी दो शाखाएँ हैं :-

मानखमेर शाखा में दो वर्ग पाए जाते हैं-खासी और निकोबारी। मेघालय के आदिवासी खासी का प्रयोग करते हैं। जबकि निकोबार द्वीप-समूह के आदिवासी निकोबारी बोलते हैं।

आस्ट्रो-एशियाई भाषाएँ भारत में 62 लाख लोग द्वारा बोली जाती हैं। जिसमें सबसे बड़ा वर्ग संथाली भाषा का है।

4) चीनी-तिब्बती या किरात भाषाएँ—इसका प्रचलन छोटे क्षेत्रों तक सीमित है लेकिन इसकी कई समूह एवं उप-समूह है। इन भाषाओं का संकेन्द्रण उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा उत्तर पश्चिम के हिमालयी और उप-हिमालयी प्रदेशों में है। इसकी तीन प्रमुख शाखाएँ हैं :-

A) तिब्बत हिमालय शाखा के प्रमुख वर्ग भूटिया तथा किन्नौरी है।

अरूणाचल प्रदेश शाखा में आका, दफला, मिरी तथा अबौर भाषाएँ सम्मिलित हैं।

नागा म्यांमारी शाखा के वर्ग बांडो, नागा तथा कूकी है।

6.6 प्रमुख भाषाएँ एवं भाषा प्रदेश (Major Languages & Linguistic Region)

प्रमुख भाषाएँ—जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि भारत में अंग्रेजी के अलावा 18 को संविधान की 8वीं अनुसूची में दर्ज किया गया है। इनमें मुख्य भाषाओं का प्रयोग एवं वितरण का विवरण निम्नलिखित है।

(1) हिन्दी (Hindi)—यह भारत की राष्ट्रभाषा है और लगभग 40 करोड़ लोगों की मातृभाषा भी है। देश की 40% से अधिक जनसंख्या हिन्दी का प्रयोग करती है। उत्तर तथा मध्य भारत से हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की 80% जनसंख्या हिन्दी बोलती हैं। यद्यपि उनकी बोलियों में पर्याप्त भिन्नता है।

(2) बंगाली (Bengali)—यह भारत के 10 करोड़ लोग द्वारा बोली जाती है। प० बंगाल के अलावा इसका विस्तार बिहार एवं असम में भी है।

(3) तेलुगू (Telugu)—तेलुगू भाषा का प्रयोग करने वाले 80% से अधिक लोग आंध्रप्रदेश में है। शेष तमिलनाडु एवं कर्नाटक में है।

(4) मराठी (Marathi)—संख्यात्मक दृष्टि से यह भारत की चौथी मुख्य भाषा है। 93% मराठी बोलने वाले लोग महाराष्ट्र में रहते हैं। कर्नाटक, मध्यप्रदेश तथा गोआ के कुछ लोग भी मराठी का प्रयोग करते हैं।

(5) तमिल (Tamil)—यह द्रविड़ परिवार की मुख्य भाषा है। भारत की कुल जनसंख्या का 6.32% भाग इस भाषा का प्रयोग करती है। देश के लगभग 91% तामिल भाषी तमिलनाडु में एवं शेष कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और पांडिचेरी में है।

(6) उर्दू (Urdu)—उर्दू भाषा का विकास भारत में मुस्लिम शासन काल के दौरान हुआ। वर्तमान में देश की 5.18% जनसंख्या इस भाषा का प्रयोग करती है। जम्मू और कश्मीर में इसे राज्य की अधिकाधिक भाषा बनाया गया है। उर्दू भाषी लोग उत्तरप्रदेश, बिहार, हरियाणा, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों में भी पाया जाता है।

(7) गुजराती (Gujarati)—यह देश की 7वीं बड़ी भाषा है जो 5% जनसंख्या द्वारा बोली जाती है। 4 करोड़ लोग गुजरात में एवं शेष महाराष्ट्र और राजस्थान में मिलते हैं।

(8) कन्नड़ (Kannad)—यह भी द्रविड़ परिवार की ही भाषा है। देश के 3 करोड़ लोग इस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। 91 कन्नड़ भाषी कर्नाटक एवं शेष तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश आदि राज्यों में पाए जाते हैं।

(9) मलयालम (Malayalam)—केरल के लगभग 92% लोग मलयालम भाषा बोलते हैं। कुछ मलयालम भाषी कर्नाटक, तमिलनाडु एवं महाराष्ट्र में भी है।

(10) उड़िया (Oriya)—यह उड़ीसा की मुख्य भाषा है जिसमें संस्कृत शब्दों का प्रयोग होता है।

(11) पंजाबी (Punjabi)—यह पंजाब की मुख्य भाषा है लेकिन, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तरप्रदेश के पंजाबी परिवार भी इसका प्रयोग करते हैं।

(12) असमिया (Assamese)—इसका प्रयोग असम एवं समीपवर्ती राज्यों-मेघालय, त्रिपुरा आदि के लोगों द्वारा किया जाता है।

(13) अन्य (Others)—उपर्युक्त के अलावा कश्मीरी, सिंधी, नेपाली, कोकणी, मणिपुरी आदि उन भाषाओं में है जिनके बोलने वाले की संख्या 10 लाख से अधिक है। जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी, सिंधी, राजस्थान में, नेपाली उत्तरांचल में, कोकणी महाराष्ट्र में और मणिपुरी मणिपुर राज्य में बोली जाती है।

भाषाई प्रदेश—भारत संघ में अधिकांश राज्यों का सीमांकन भाषा के आधार पर हुआ है। लेकिन, देश के मध्य, उत्तर-पूर्वी और पूर्वी भागों में विभिन्न जनजातियों का वितरण पाया जाता है। इनके द्वारा

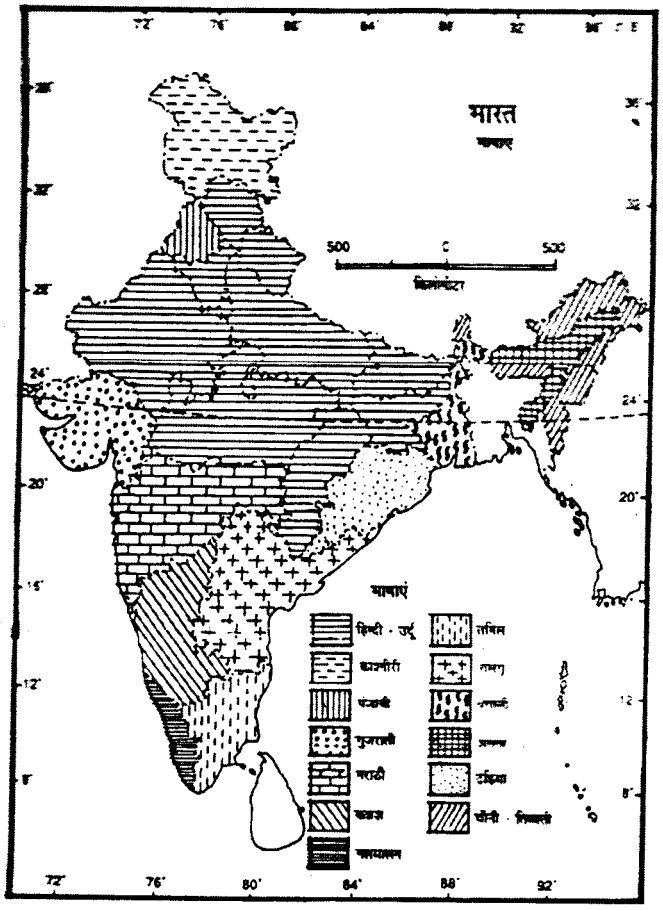

चित्र : भारत की प्रमुख भाषाएँ एवं भाषा प्रदेश

प्रयोग में लायी जाने वाली बोलियों के इतने प्रकार हैं कि इनकी व्यवस्था को समझ पाना अत्यन्त कठिन कार्य है। अतः इन बोलियों ने प्रदेश के भाषाई आधार पर सीमांकन में विकृति उत्पन्न कर दी है। इन भाषाओं के आधार पर देश को भाषा प्रदेश में विभक्त किया गया है। जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है। यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि विभिन्न भाषा को प्रयोग करने वाले जनसंख्या की बहुलता के आधार पर ही भाषा प्रदेश का निर्धारण किया गया है।

	भाषाई प्रदेश	राजनैतिक प्रदेश
1.	कश्मीरी जम्मू एवं कश्मीर	
2.	पंजाबी	पंजाब
3.	हिन्दी/उर्दू	बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली
4.	बंग्ला	प० बंगाल, अण्डमान निकोबार
5.	असमिया	असम तथा उत्ती पूर्वी राज्य के अन्य क्षेत्र
6.	उड़िया	उड़ीसा
7.	गुजराती	गुजरात
8.	मराठी	महाराष्ट्र, गोवा
9.	कन्नड़	कर्नाटक
10.	तेलुगु	आंध्रप्रदेश
11.	तमिल	तमिलनाडु, पांडिचेरी
12.	मलयालम	केरल, लक्षद्वीप

6.7 भारत का भाषाई संघटन (Languistic Composition of India)

भारत का भाषाई संघटन (1991)

8वीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ	मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वाली जनसंख्या (करोड़ में)	देश की कुल जनसंख्या का प्रतिशत
हिन्दी	33.73	40.42
बंग्ला	6.96	8.30
तेलुगु	6.60	7.87

मराठी	6.25	7.45
तमिल	5.30	6.32
उर्दू	4.34	5.18
गुजराती	4.07	4.85
कन्नड़	3.28	3.91
मलयालम	3.04	3.62
उड़िया	2.81	3.35
पंजाबी	2.34	2.79
असमिया	1.31	1.56
सिंधी	0.21	0.25
नेपाली	0.21	0.25
कोकणी	0.18	0.21
मणिपुरी	0.127	0.15
कश्मीरी	0.006 (60 हजार)	0.01
संस्कृत	0.006 (50 हजार)	0.01

उपर्युक्त तालिका 1991 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित भाषाओं तथा मातृभाषा के रूप में बोलने वाले की संख्या को प्रदर्शित कर रही है।

देश की 40.42% जनसंख्या हिन्दी भाषी है। दूसरे स्थानपर बंग्ला है जो देश के 8.30% लोगों द्वारा प्रयोग में लायी जाती है। देश में बोली जानेवाली अन्य प्रमुख भाषाएँ है-तेलुगु, मराठी, तमिल, उर्दू, आदि। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को संविधान में राजभाषा के रूप में स्वीकारा गया है तथा हिन्दी और अंग्रेजी को भारतीय संघ की राजभाषाओं के रूप में मान्यता प्राप्त है।

6.8 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त अवलोकन से स्पष्ट है कि 'भाषा' समाजीकरण तथा सांस्कृतिक प्रसार की सशक्त साधन है। पारस्परिक सम्पर्क, सांस्कृतिक एवं विचारों के आदान-प्रदान और राष्ट्रीय एकता को बनाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में 18 प्रकार की भाषाएँ दर्ज हैं। द्रविड़ भाषा यहाँ की प्राचीनतम भाषाओं के परिवार में शामिल है। इसके अलावा यहाँ प्रयोग की जानेवाली भाषा मुख्यत: भारोपीय आग्नेय एवं चीनी-तिब्बती परिवार से हैं।

भारत संघ के अधिकांश राज्यों का पुनर्गठन भाषाई आधार पर किया जाता है। भाषा की बहुलता के आधार पर भारत को 12 भाषाई प्रदेशों में बाँटकर इसका अध्ययन किया जा सकता है। देश में हिन्दी भाषी लोगों की बहुलता है एवं हिन्दी को राष्ट्रभाषा की मान्यता प्राप्त है। भारत संघ की राजभाषाओं के रूप में हिन्दी एवं अंग्रेजी को मान्यता दी गई है। इसके अलावा त्रिभाषा सूत्र एक मातृभाषा के रूप में हिन्दी, अंग्रेजी का हिन्दी को मान्यता दिलाने के लिए समझौते के रूप में पालन किया जा रहा है।

6.9 अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise)

(A) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(1) भारत के प्रमुख भाषा परिवारों का विवरण प्रस्तुत करें।

(2) भारत के भाषाई संघटन का वर्णन करें।

(3) भारत के प्रमुख भाषाई समूह कौन-कौन से हैं?

(B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(1) भारत के प्रमुख भाषा परिवारों की चर्चा करें और भारत के भाषा प्रदेशों का विवरण प्रस्तुत करें।

(2) भारत के भाषा प्रदेशों एवं परिवारों की चर्चा करते हुए भारत के प्रमुख भाषा के विवरण दें।

6.10 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) जनसंख्या भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य।

(2) जनसंख्या भूगोल- डॉ० रामदेव त्रिपाठी।

(3) Geography of Population - R.C. Chandana

(4) Population Geography - J.I. Clarke

(5) सामाजिक भूगोल - डॉ० एस० डी० मौर्य।

❖❖❖

भारत में जनसंख्या की वृद्धि
(Growth of Population in India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

1.0 उद्देश्य (Objective)
1.1 परिचय (Introduction)
1.2 भारत में जनसंख्या वृद्धि का इतिहास (History of Population Growth)
1.3 भारत में जनसंख्या की वृद्धि (Growth of Population in India)
1.4 भारत में जनंसख्या वृद्धि के स्थानिक प्रतिरूप (Spatial Patterns of Population Growth in India)
1.5 भारत में जनसंख्या वृद्धि रोकने के उपाय (Remedy to Control, Growth of Population in India)
1.6 जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम (Bad Consequences of Growth of Population)
1.7 निष्कर्ष (Summing-up)
1.8 मॉडल प्रश्न (Model Questions)
1.9 संदर्भ ग्रंथ (Reference Books)

1.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय मे हम जान पायेंगे कि भारत में जनगणना का इतिहास बहुत पुराना है। व्यवहारिक रूप में जनगणना का शुभारम्भ 1871 में हुआ। तत्पश्चात प्रत्येक दस वर्षों पर जनगणना होती रही। जनसंख्या की वृद्धि उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं बीसवीं सदी के पूर्वाद्ध में प्राकृतिक कुप्रभावों के कारण नगण्य रही। परन्तु चिकित्सा के समुचित विकास तथा औद्योगिक एवं सिंचाई के साधनों के विकास के कारण जनसंख्या में क्रमशः वृद्धि होती गई।

1.1 परिचय (Introduction)

भूगोल के अध्ययन में मानव का एक आधारभूत महत्व है। मनुष्य किसी भी देश, राज्य तथा प्रदेश का एक भौगोलिक तत्व के साथ-साथ कारक एवं संसाधन तीनों हैं। मानव संसाधन से आशय देश विशेष

की जनसंख्या, उसकी गुणवत्ता, शिक्षा, कुशलता, दूरदर्शिता एवं उत्पादकता से है जिस पर ही उस समस्त राज्य अथवा प्रदेश का विकास निर्भर करता है। प्रदेश विशेष में निवास करनेवाले मानव उस समस्त प्रदेश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों तथा अन्य संसाधनों का तकनीकी ज्ञान कला, विज्ञान द्वारा बुद्धिमतापूर्ण समुचित उपयोग करके उस प्रदेश को विकसित करता है। साथ ही देश के आर्थिक विकास के लिए प्रशिक्षित एवं दक्ष मानव शक्ति प्रदान करता है। किसी देश की शक्ति उसके शिक्षित स्वस्थ्य परिश्रमी निवासियों में ही निहित होती है अर्थात जो देश मानव संसाधन को जितनी कुशलता से आर्थिक क्रियाकलापों के विकास में उपयोग कर लेता है वह देश उतना ही आर्थिक रूप से सम्पन्न हो जाता है।

भारत विश्व का चीन के बाद द्वितीय सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र है। यहाँ विश्व के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.4% क्षेत्रफल तथा 16.7% जनसंख्या पायी जाती है। सन् 1991 ई० में यहाँ की कुल जनसंख्या 84.63 करोड़ थी जो 2001 ई० में बढ़कर 84.63 करोड़ हो गयी है। 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में जनसंख्या का घनत्व 267 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि०मी० था जो 2001 में बढ़कर 324 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि०मी० हो गया है।

1.2 भारत में जनसंख्या वृद्धि का इतिहास (History of Population Growth in India)

वेदों उपनिषदों एवं सिन्धु घाटी की सभ्यता के इतिहास से यह विदित होता है कि भारत में मानव सभ्यता का उदय बहुत ही प्राचीन काल में हो गया था। वैदिक धर्म ग्रंथों के अनुसार भारत अनेक राज्यों प्रदेशों, जनपदों, आदि छोटे-छोटे भागों में बँटा हुआ था। अत: भारत में जनगणना का इतिहास बहुत पुराना है क्योंकि सभी जनपदों की जनगणना का उल्लेख भी इन धर्म ग्रंथों में मिलता है। भारत में अनुमित जनसंख्या के आकलन का श्रेय सर्वप्रथम 'मोर लैण्ड' को दिया जा सकता है। मोर लैण्ड के अनुसार भारत में सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में भारत की अनुमित जनसंख्या लगभग 10 करोड़ थी जिसमें क्रमश: वृद्धि होती गई, अर्थात् जनसंख्या 1750 ई० में भारत की जनसंख्या बढ़कर 13 करोड़ हो गयी। 'फिण्डले शिराज' ने एक अनुमान के आधार पर बतलाया कि उस अवधि में जनसंख्या वृद्धि की दर 2% प्रति दशक थी। इस प्रकार जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होती गयी। इस प्रकार भारत में जनगणना का इतिहास बहुत पुराना है।

1.3 भारत में जनसंख्या की वृद्धि (Growth of Population in India)

भारत में अनवरत गति से जनसंख्या की वृद्धि होती गई। सन् 1847 तथा 1850 के मध्य भारत की अनुमित जनसंख्या 15 करोड़ थी। ब्रिटिश प्रशासन द्वारा भारत में पहली बार 1871 ई० में जनगणना आयोग की स्थापना की गई। इस वर्ष भारत में सर्वाधिक शुद्ध एवं व्यवहारिक रूप में जनगणना की गई। 1871 की जनगणना के अनुसार भारत की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 25 करोड़ थी। तत्पश्चात् प्रति दशाबदी जनगणना होती रही। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या की विभिन्न